clickastro

SERVED OVER 110 MILLION SMILES

SINCE 1984

IN-DEPTH HOROSCOPE

PREMIUM REPORT

ॐ श्री गणेशाय नमः

Horoscope of Rahul Kumar

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन हेतु
इस कुंडली का निर्माण किया गया

clickastro
#FuturePositive

Astro-Vision In-Depth Horoscope

नाम	: Rahul Kumar
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 1 जनवरी, 1989 रविवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 12:05:00 AM Standard Time
समय क्षेत्र (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थान	: New Delhi New Delhi India
रेखांश &अक्षांश (Deg.Mins)	: 77.12 पूर्व, 28.36 उत्तर दिशा
अयनांश	: चैत्रपक्ष = 23 डिग्री. 42 मिनिट. 19 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: हस्त - 4
जन्म राशी - राशी स्वामी	: कन्या - बुध
लग्न - लग्न स्वामी	: कन्या - बुध
तिथि	: नवमी, कृष्णपक्ष

सूर्योदय	: 07:14 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 05:35 PM
दिनमान (Hrs. Mins)	: 10.21
दिनमान (Nazhika.Vinazhika)	: 25.52
स्थानीय समय	: Standard Time - 21 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शनिवार
कलिदिन	: 1859061
दशा पद्धति	: विंशोत्तरी, साल = 365.25 दिन

नक्षत्र स्वामी	: चंद्र
गण, योनी, पशु	: देव, स्त्री, भैंस
पक्षी, वृक्ष	: काग, जंगली आम
चन्द्र अवस्था	: 12 / 12
चन्द्र वेला	: 35 / 36
चन्द्र क्रिया	: 58 / 60
दग्ध राशी	: सिंह,वृश्चिक
करण	: तैतिल
नित्य योग	: अतीगंड
सूर्य की राशी - नक्षत्र का स्थान	: धनु - पूर्वाषाढा
अंगादित्य का स्थिति	: पैर
Zodiac sign (Western System)	: Capricorn

योग बिंदु - योगी नक्षत्र	: 162:44:0 - हस्त
योगी ग्रह	: चंद्र
दुष्यम योगी	: बुध
अवयोगी नक्षत्र - ग्रह	: ज्येष्ठा - बुध
आत्मकारक (आत्मा) - कारकांश	: मंगल - कुंभ
अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति)	: शुक्र
अरूढ लग्न (पद लग्न)	: वृषभ
धन अरूढ	: धनु

ग्रहों का सायन रेखांश

ग्रहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के अनुसार दिया गया है। जिसमें युरेनस, नेपच्युन और प्लूटो को भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप की राशी - मकर

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला
लग्न	185:35:52	गुरू	56:44:30 वक्री
चंद्र	196:29:27	शनी	275:33:59
सूर्य	280:19:10	यूरेनस	271:44:25
बुध	297:1:1	नेप्टयून	279:54:47
शुक्र	257:30:43	प्लूटो	224:33:0
मंगल	20:5:18	अयन	337:48:0

ग्रहों के निरयन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। सभी गणनाएं, कोष्टक, विवेचन विश्लेषण समय संस्कार आदि भारतीय फलित ज्योतिष के 'सायन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

ग्रहों का निरायन रेखांश

भारतीय फलित ज्यातिष में सभी गणनाएँ और संस्कार सायन पद्धति के अनुसार किये जाते हैं। सायन रेखांश से निरायण रेखांश को घटा कर निरायण मूल्य ज्ञात किया जाता है।

अयनांश की गणना अलग अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये हैं: चैत्रपक्ष= 23डिग्री.42 मिनिट.18 सेकेन्ड.

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
लग्न	161:53:33	कन्या	11:53:33	हस्त	1
चंद्र	172:47:8	कन्या	22:47:8	हस्त	4
सूर्य	256:36:51	धनु	16:36:51	पूर्वाषाढा	1
बुध	273:18:42	मकर	3:18:42	उत्तराषाढा	2
शुक्र	233:48:24	वृश्चिक	23:48:24	ज्येष्ठा	3
मंगल	356:22:59	मीन	26:22:59	रेवती	3
गुरू	33:2:11	वृषभ	3:2:11 वक्री	कृत्तिका	2
शनी	251:51:40	धनु	11:51:40	मूल	4
राहु	314:5:41	कुंभ	14:5:41	शततारका	3
केतु	134:5:41	सिंह	14:5:41	पूर्वा	1
गुलिक	160:10:54	कन्या	10:10:54	हस्त	1

राशी

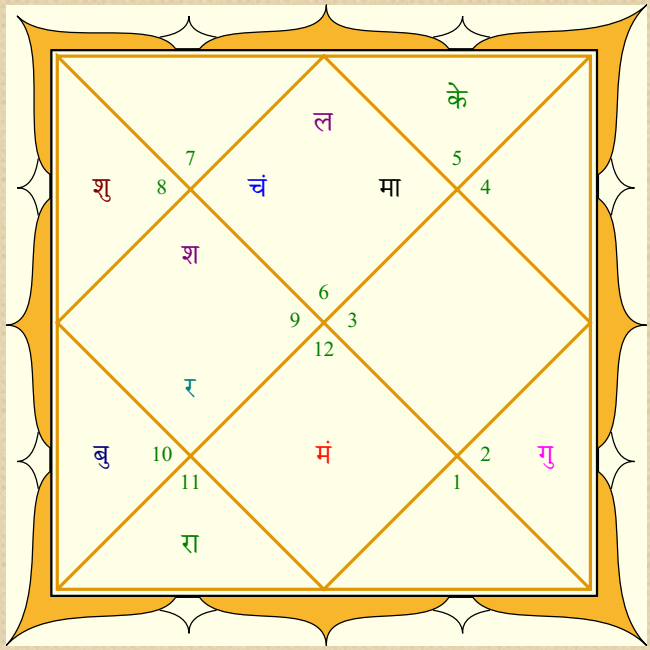

जन्म के समय दशा का भोग्य काल= **चंद्र 0 साल, 4 मास, 28 दिन**

नवांश

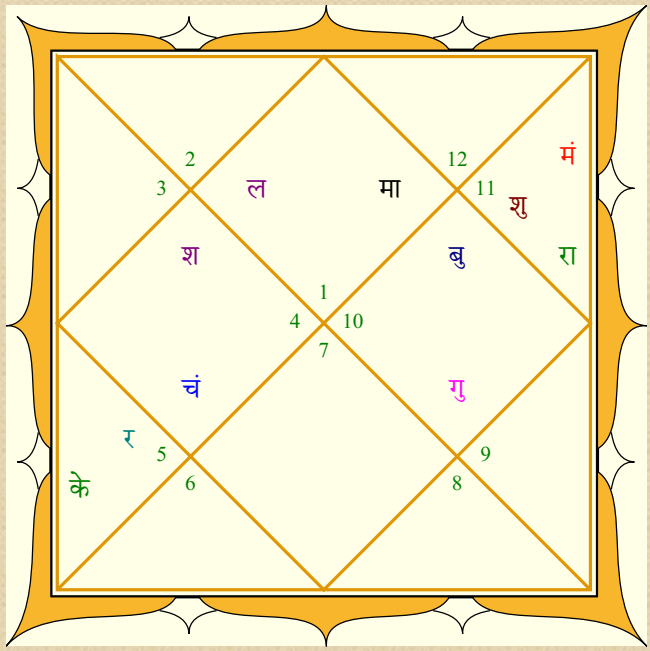

भाव कुंडली

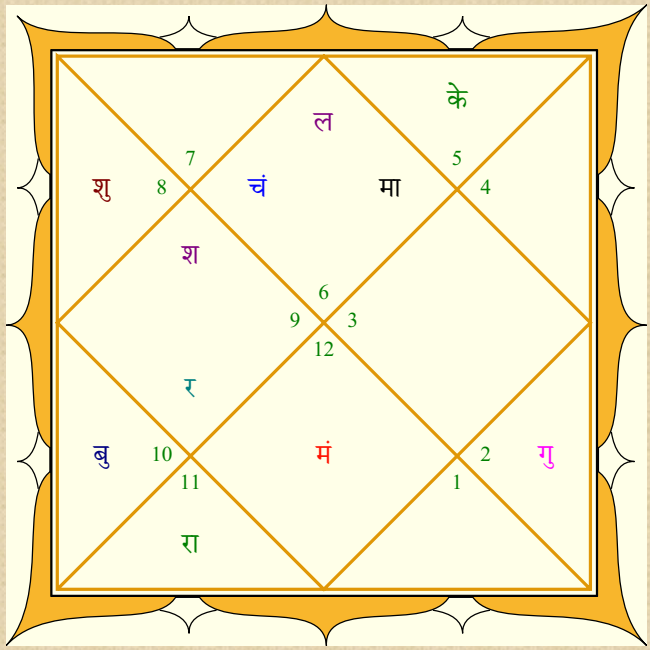

भाव कोष्टक

भाव	आरंभ प्रारंभ डिग्री:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य मध्य डिग्री:मिनिट:सेकेन्ड	अन्त्य अंत डिग्री:मिनिट:सेकेन्ड	ग्रह भाव स्थिती
1	146:55:52	161:53:33	176:55:52	चं,मा
2	176:55:52	191:58:11	207:0:30	
3	207:0:30	222:2:49	237:5:9	शु
4	237:5:9	252:7:28	267:5:9	र,श
5	267:5:9	282:2:49	297:0:30	बु
6	297:0:30	311:58:11	326:55:52	रा
7	326:55:52	341:53:33	356:55:52	मं
8	356:55:52	11:58:11	27:0:30	
9	27:0:30	42:2:49	57:5:9	गु
10	57:5:9	72:7:28	87:5:9	
11	87:5:9	102:2:49	117:0:30	
12	117:0:30	131:58:11	146:55:52	के

पंचाग फलादेश

सप्ताह के दिन में। : शनिवार

आपका जन्म रविवार को सूर्योदय के पहले हुआ था। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दिन की शुरुवात सूर्योदय के बाद ही होती है। इसलिए आपकी जन्म तिथि शनिवार को माना जायेगा।

शनिवार में जन्म लेने पर यह विदित होता है कि जब तक कोई परिस्थिति विवश ना करे आप निष्क्रीय रहना चाहते हैं। बकवास करने की प्रवृत्ति पर आपको नियंत्रण रखना चाहिए। अक्सर आपको लगेगा कि आप जितना चाहते है उतना खर्च नहीं कर सकते। आप भावनात्मक और कोमल प्रकृति के होंगे।

जन्म नक्षत्र : हस्त

आपका जन्म नक्षत्र हस्त है। आप उत्साही, मेधावी, शूरवीर, निडर, मनस्वी, यशस्वी, परदेस में रहनेवाले और दूसरों के काम आनेवाले व्यक्ति हैं। गुरूजनों, विद्वानों और धर्माचार्यों को सम्मान देंगे। सब तरह की संपत्ति प्राप्त होगी, चाहे न्यून मात्रा में ही। शास्त्र के इन वचनों की ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा - 'असत्य भाषणों धूर्त: सुरापो बन्धुवर्जित:। हस्ते जातो नरचैव जायते परदारिक:॥' अर्थात् हस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति असत्य भाषी, धूर्त,मध्यपी, बन्धुहीन या बन्धुओं से मिलजुल कर न रहनेवाला और परस्त्रीगामी होता है।

तिथि : नवमी

नवमी तिथि में पैदा होने वालों की अपनी इच्छाओं की पूर्ति होती है। प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए अति पुरुषार्थ करने वाले हैं। धन और साधन कमाने में विशेष चतुरता प्रकट करने वाले हैं। समस्याओं का कुशलता पूर्वक समाधान करने में निपुण हैं। आप हर कार्य को बड़ी कुशलता से पूर्ण करते हैं। समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। प्रतिस्पर्धी को पराजित करने में प्रवीणता प्राप्त है। सत्पुरुषों का विरोध और आचार हीन व्यक्तियों का साहचर्य पसंद होगा।

करण : तैतिल

क्योंकि आपने तैतिल करण में जन्म लिया है अपने विचारों और वाक्यों पर टिका रहना मुशिकल समझते हैं। अक्सर आप अपने अनुमानो पर अडिग नहीं रहते। आप अपना आवास हमेश बदलते रहेंगे।

नित्य योग : अतीगंड

आपका जन्म 'अतिगण्ड' नित्ययोग में हुआ है। इस योग के कारण संगीत, सिनेमा, प्राचीन कला तथा अन्य ललित कलाओं में आप बड़ी रुचि रखते हैं। यह सब होने पर भी लड़ने और झगड़ने में और प्रतिस्पर्धा में भाग लेने में निपुण हैं। आप शरीर और मन से दृढ हैं। दूसरे लोग आपको आसानी से वश में नहीं कर सकते। तर्क-वितर्क की कला में भी निपुण हैं। अहंकार, पाखंड और क्रोध आपके शत्रु हैं।

भाव फल

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव की यह विज्ञापन समीक्षा करता है। इस विज्ञापन में उल्लेखित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करते हैं ।

व्यक्तित्व, शारीरीक बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता हैं। यह लग्न कहलाता है।

लग्न कन्याराशि में रहने से कफ़ और पित्त के मिश्रण से युक्त स्वास्थ्य प्राप्त होगा। सौन्दर्य से, शारीरिक लावण्य से और आकर्षक वेषभूषा से आप अन्य लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। कौमार्य से यौवन में कदम रखते-रखते आप में अधिक रूप लावण्य प्रकट होगा। समवयस्क व्यक्तियों को आप अधिक प्रभावित कर सकेंगे। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति विशेष प्रकार का मनोभाव रखने वाले हैं। आप निर्भय होते हुए भी विपरीत लिंग के लोगों के प्रति विद्वेषात्मक स्वभाव प्रगट करनेवाले हैं। अस्थिव्यंग की संभावना हैं। सन्मार्ग से संपत्ति उपार्जन होगी। रेत, पत्थर इत्यादि के माध्यम से और खेती से लाभ की संभावना है। अर्थात् आपके लिए बिल्डिंग मेटेरियल और कृषि से संबंधित कार्य भी लाभप्रद हो सकते हैं। रक्षा विषयक कामों और छावनी के निकट निवास इत्यादि से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। पशुपालन कार्य में अभिरूचि रखनेवाले हैं। स्वयं का जीवन अनुशासन पूर्ण और व्यवस्थित रखने का सदा प्रयास रहता है। 25से 28 वर्ष तक का समय चिरस्मरणीय होगा। संतान की परवरिश में ज़्यादा ध्यान देना आपके लिए अनिवार्य है। यदि संतान को गुणवान और विद्वान देखना चाहते हैं तो थोड़ा समय उनके लिए निकालें। डराने-धमकाने के बदले प्रेम और अनुरागपूर्ण व्यवहार श्रेष्ठ फल की प्राप्ति दे सकता है। जीवनसाथी में असाधारण कामवासना का अनुभव होगा। आपकी संतान में सौन्दर्य की कमी है ऐसा सोचकर व्यर्थ ही दु:खी होने की आवश्यकता नहीं है। सदगुण रूप से अधिक महत्व रखता है। जीवनकाल में आप धनवान और श्रीमंत बन पायेंगे। अत्यधिक संपत्ति के मालिक बनेंगे फिर भी कभी-कभी दु:खी होना पड़ेगा। आजीवन काल विदेश या दूरदेश बसने का योग है। विद्या से संबंधित कार्य में और शिक्षा प्रदान करने के कार्य में एक रस अभिरूचि रखने वाले हैं। आप जन समुदाय के लिए सम्मान और कीर्ति के पात्र बनेंगे। आपका रूप और जीवन दोनों प्रभावशाली दिखाई देंगे। समाज सेवा में अभिरूचि रखने वाले हैं। 'कामातुराणां न भयं न लज्जा' को गलत सिद्ध करने का प्रयत्न ही सम्मान की रक्षा कर सकेगा।

आमदनी का मार्ग कितना भी सरल क्यों न हो फिर भी आर्थिक निर्बलता का सामना करना होगा। फिर भी आर्थिक स्थिति संतोषजनक रहेगी। इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। सट्टा और जुए से और उसमें रस लेने वाले मित्रों से दूर ही रहना अच्छा होगा। व्यर्थ के खर्च से बचने के लिए सूक्ष्म दृष्टि अनिवार्य है। जीवन का 18,24,30,36,42,49 और 55 वाँ वर्ष आपके लिए अति महत्वपूर्ण रहेंगे।

लग्नाधिपति पाँचवे स्थान पर हैं। आप बच्चों के कारण सदा चिंतित रहने के आदि हैं। प्रतिकूल स्थिति में क्रोध को नियंत्रण के आधीन रखना कठिन होगा। उच्च अधिकारियों या बडों से पूरा सहकार प्राप्त होता रहेगा। आप उनके स्नेह और वात्सल्य के पात्र बनेंगे। यह शास्त्र प्रमाण पूरी तरह लागू होगा। लग्नौ पञ्चमे मानी सुत सौख्यं च मध्यमम्॥ प्रथमापत्य नाशच क्रोधी राजप्रवेशक:॥

चन्द्र प्रथम स्थान पर रहा है। इस कारण सौन्दर्यमय नेत्र और स्वस्थ आरोग्यपूर्ण शरीर प्राप्त होगा। स्वभाव से हर कार्य आत्मीयभाव से करनेवाले हैं।

क्योंकि मंगल ग्रह लग्न से प्रभावित है आप दानशील होंगे।

गुरू लग्न से प्रभावित है। आप हमेशा अच्छे और साफ कपडे पहनना चाहते हैं और बोली में अच्छे वाक्यों का प्रयोग करना चाहते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टी है, और यह अच्छी सूचना नहीं हैं। दूषित वातवरण और संदेह युक्त दोस्तो से दूर रहना चाहिए।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, संपत्ति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे हैं जो दूसरे भाव द्वारा सूचित की जाती है। इसे धन स्थान कहते हैं।

दूसरे भाव का स्वामी तीसरे स्थान पर रहने से आप में धैर्य, बुद्धिचातुर्य और श्रेष्ठ स्वभाव का आविर्भाव होगा। स्त्री और पुरूष दोनों के साथ श्रेष्ठ संबंध स्थापित होंगे। समूह के बीच जिन कार्यों का निषेध किया जाता है, उन्हीं कार्यों से जुड़े रहने का योग दिखाई देता हैं। अन्यथा ऐसे कार्यों से धन संपन्नता हो सकती है। दानवी वृत्ति के लोगों से संबंध स्थापित होगा। आपको ठग पाना सरल न होगा। आप देवता में भी दानत्व ढूंड निकालेंगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि गुरू की दृष्टी दूसरे स्थान के स्वामी पर है। आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तकों को पढना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं।

क्योंकि दूसरे स्थान का स्वामी पर चौथे भाव के स्वामी की दृष्टी है, आप मातृक संबंधो से धन और संपत्ति पा सकते हैं।

क्योंकि दूसरे स्थान का स्वामी सातवें स्थान के स्वामी की दृष्टी में है, आप अपने जीवन साथी से धन और संपत्ति पा सकते हैं।

भाई / बहन

जन्मकुण्डली का तीसरा स्थान, आपके भाई - बहन, धैर्य और बुद्धि को सूचित करता हैं।

तीसरा भावाधिपति सातवें स्थान पर होने से बालावस्था में अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। जीवन के उत्तरार्धकाल में समस्याओं से मुक्ति प्राप्त होगी। स्वतंत्र व्यापार आप के लिए लाभदायक नहीं है। आप श्रेष्ठ अफसरों या बडों के मार्गदर्शन का लाभ उठाकर प्रगति कर सकते हैं। उच्च अधिकारियों के आधीन रहकर काम करना अच्छा होगा। आप की सेवा के कारण उनसे प्रीति प्राप्त होगी। किसी चीज़ के नष्ट होने या खो जाने का आरोप आप पर लगाया जा सकता है। सरकार या न्यायालय का निर्णय आपको कष्टदायी हो सकता है। धन का अनुचित मार्ग से संग्रह करना महंगा पड सकता है। किसीसे अधिक निकटता और गहरी मित्रता बदनामी के अतिरिक्त कुछ और न दे पायेगी।

तीसरे स्थान पर शुक्र होने के कारण जीवनसाथी से स्नेह मिश्रित व्यवहार संपन्न होगा। रीति-रिवाज़ और व्यवहार के कच्चे हैं। इस कारण अनेक आक्षेपों का सामना करना पड़ेगा। आपको कीर्ति, संपत्ति और दीर्घायु प्राप्त होगी।

केंद्र, स्वस्थान, त्रिकोण में तीसरे स्थान के स्वामी के साथ मंगल ग्रह की उपस्थिति, यह सूचित करती है कि आपको बंधू भगिनी का सुख यथेष्ट मिलेगा। इस प्रकार का अनुकूल ग्रह योग आपकी जन्मकुण्डली में दिख रहा है।

तीसरे भाव में उपस्थित शुभ ग्रह आपके भाई - बहन को दीर्घायु प्रदान करते हैं।

शुक्र तीसरे भाव में स्थित हैं और गुरु की पूर्ण दृष्टि में है अतः आपके बंधू बांधवों को आपका पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा।

संपत्ति, विद्या इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबंधित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचक है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका के चौथे भाव का स्वामी नौवे भाव में स्थित है। इसे भाग्य का जोड़ कह सकते हैं। आपके जीवन में पिताजी की बड़ी अहमियत होगा। आपको मिली हुई संपन्नता और प्रगति के कारण आपके पिता हैं। संपत्ति कमाने का भाग्य भी आप को प्राप्त है। जीवन में मिली हुई खुशी आप परिवार के बीच बाँटना पसंद करते हैं। शिक्षण कार्य में भी श्रेष्ठ प्रगति होगी।

चौथे भाव का स्वामी गुरु (बृहस्पति) है। श्रेष्ठ धार्मिक प्रचारक तुल्य लक्ष्यबोध आप में प्रकट हो उठेगा। धर्मगुरु सा सम्मान प्राप्त होगा। आपका व्यक्तित्व विद्यार्थी काल में और सभी कार्यक्षेत्र में सहयोगी बनेगा। आपकी आत्मीयता और स्वाभिमानी स्वभाव आपके मुख्य लक्षण है। एक न्याय मूर्ति के तुल्य समता और समभावपूर्ण व्यवहार आपकी शोभा में ओर भी बढ़ावा देगा। आपकी मानसिक परिपक्वता और निर्णयात्मक शक्ति उल्लेखनीय है।

सूर्य चौथे भाव में स्थित होने से आप अकारण परेशान होकर अपने और दूसरों के सुख में बाधा डालने के आदि हैं। व्यर्थ ही अस्वस्थ होने के भी आदि हैं। इन कारणों से व्यर्थ ही परिवार के लोग और मित्र परेशान होंगे। अकारण भटकने की संभावना है। पारिवारिक संपत्ति मिलने का योग है। दार्शनिक वाद-विवादों में विशेष रुचि रखनेवाले हैं। राजकारण की खटपटों से दूर रहना आपके लिए लाभदायी होगा। मातृसुख के लिए प्रयत्नशील रहना होगा। छाती या पेट में विकार के लक्षण प्रकट होते ही तत्काल वैद्यकीय परामर्श लेना उचित होगा।

दर्शन, राष्ट्र मीमांसा, मनोविज्ञान, धातुविज्ञान और मानवजीवन के विकास कार्यों में नैसर्गिक अभिरुचि आप में बचपन से ही विकसित हुई है। लोक कल्याण के कार्यों में सदा मग्न रहने के कारण मानसिक शान्ति प्रदान होगी। मानव कल्याण के सर्व कार्य सुंदरता से कर पायेंगे।

शनि आपके चौथे भाव में स्थित है। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। आप आलसी स्वभाव के हैं। मातृसुख इच्छानुसार न प्राप्त होने से अप्रसन्न रहेंगे। सामान्यत: एकान्त प्रिय हैं। कुछ संबंधियों से आपका अप्रिय व्यवहार रहेगा। मकान, वाहन इत्यादि के सिलसिले में तैयार किए कागज़ात पर हस्ताक्षर करने से पहले ठीक से देखलेना आवश्यक होगा। परिवार के सुख और समृद्धि के लिए कई स्थानों पर भाग-दौड़ करनी होगी। शनि के 'स्थान वृद्धि कर मंद' वचनानुसार अन्तत: चतुर्थ भाव संबन्धी सुख मिलकर ही रहेंगे।

बच्चे, बुद्धि, प्रतिभा

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव संतान, शिक्षा, मन और बुद्धि को सूचित करता है।

बुध पाँचवें स्थान पर रहा है। आश्चर्यपूर्ण आकस्मिक घटनाओं के प्रति अति अभिरुचि रखनेवाले व्यक्ति हैं। सांस्कृतिक और विनोदयुक्त कार्यों में आपकी अभिरुचि रहती है। आप छोटे परिवार के अंग बनेंगे। लौकिक कार्यों के साथ साथ आध्यात्मिक कार्यों में भी अभिरुचि रहेगी।

पाँचवां भावाधिपति चौथे स्थान पर रहने से अपने कारोबार में निपुणता प्रगट होगी। मातृ पक्ष से सद्भाग्य, बुद्धिशक्ति, संतोष और संपत्ति निश्चित ही प्राप्त होगी। सौन्दर्यपूर्ण वातावरण का सर्जन होगा। आप की माता दीर्घायु होगी। प्रतिष्ठा और उच्च पद प्राप्त करना सरल होगा।

लग्न से पाँचवे भाव में शुभ ग्रहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ ग्रह जो इस भाव को देख रहे हों, अर्थात इन ग्रहों की इस स्थान पर दृष्टि हो तो यह संतति सुख, विद्या आदि विषयों से संबंधित अच्छे फल मिलते हैं।

रोग, शत्रु , कठिनाइयाँ

छठा भाव रोग, शत्रु और बाधाओं और कठिनाइयों का द्योतक है।

राहु छठे स्थान पर रहा है। वह संपत्ति का मालिक है। दीर्घ आयु का जीवन प्राप्त है। चर्मरोग के लक्षण प्रकट होते ही तुरन्त डाक्टरी इलाज करना बुद्धिगम्य माना जायेगा। प्रणय संबन्ध से दूर रहना अच्छा होगा। क्योंकि उसमें संतोष कम और दु:ख ज़्यादा प्राप्त होगा।

छठे भावाधिपति के चौथे स्थान पर रहने से मातृ सुख में न्यूनता का अनुभव होगा। आप यूँ बुद्धिमान हैं लेकिन हृदय से चंचल स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप के बारे में अनेक अपवादों का प्रचार होगा। ईर्ष्या और द्वेष से बचते रहना हितकर होगा। सुनी हुई बात को बढा चढा कर प्रस्तुत करने की आदत से भी बचें। नेत्रों में लालिमा या रोग प्रकट होते ही डाक्टर से परामर्श लेना लाभप्रद होगा।

छटवें स्थान का स्वामी शनि ग्रह के साथ उपस्थित हैं। आपको धन संपत्ति के नष्ट होने का भय निरंतर बना रहेगा और अचल संपत्ति के विषय में अनावश्यक परेशानी बनी रहेगी।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुडे हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति नवमें स्थान पर है। उम्र की अपेक्षा आप की पत्नी छोटी होते हुए भी, वह कार्यकुशल और विवेकशील स्त्री रहेगी। आप मितभाषी हैं और आप की अर्धांगिनी स्वभाव से वाचाल है। उसके वाचाल स्वभाव के कारण अनेक छोटे-मोटे प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं। गृह के छोटे-मोटे कार्य के निर्वाह के लिए समय का अभाव उत्पन्न होता रहेगा। बच्चों के अभ्यास क्षेत्र में गुण-दोष मिश्रित फल प्राप्त होता रहेगा। आप की प्रगति विवाह के बाद होगी। विदेश से अनेक लोगों के माध्यम से सहयोग और लाभ प्राप्त होगा। ईर्ष्यालु पड़ोसी का सामना करना पड़ेगा। उन लोगों के साथ हर कार्य में आत्मनियंत्रण लाभदायक रहेगा।

दक्षिण दिशा से उत्तम जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

मंगल सातवें स्थान पर हैं। विवाह कार्य में विलंब या विघ्न की संभावनायें हैं। विवाह के बाद पत्नी से प्रेरणा शक्ति प्राप्त होगी। अन्य कोई दुरूपयोग न कर बैठे इसका ध्यान रखना आवश्यक है। आपके मन की इष्ट-अनिष्ट इच्छाओं को उचित स्थान पर प्रकट करना होगा। अन्यथा बाद में पछताना होगा। मानसिक बोझ उठाने का और मानसिक क्लेशों के आधीन होने की संभावनायें रखते हैं। ठीक प्रकार से जागरूक रहना होगा। अन्यथा मानसिक दबाव के अंत में विध्वंसक संजोग उपस्थित हो सकते हैं। आप बुद्धिमान है, फिर भी व्यवहार कुशलता में कच्चे हैं। मन जितना विकल्पों से भरा रहेगा उतनी ही कार्यशक्ति क्षीण होती जाएगी।

चन्द्र गुरू के अधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद् रहेगा। यह निश्चित है।

शुक्र पर गुरू की दृष्टि पड़ने से अन्य दोषयुक्त फलों की शक्ति क्षीण होगी।

दीर्घायु , कठिनाईयां

आठवें भाव से दीर्घायु, वैधक चिकित्सा, मृत्यु, और अन्य कठिनाइयों का अध्ययन किया जाता है।

आठवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर रहने से जीवनसाथी से सुमेल और सहयोग स्थापित करने में ज़्यादा प्रयत्नशील रहना होगा। अपने कार्यक्षेत्र में भी अनेक मुश्किलों का सामना करना होगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना लाभदायक होगा। भक्तिपूर्ण कार्यों में अभिरुचि रहेगी। लेकिन वह गुप्त रहेगी। आप अपने मनोभाव जल्दी से अभिव्यक्त नहीं करते। अन्य की संपत्ति आपको प्राप्त होगी।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नववा भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। साहित्य कार्य से या वक्तृत्व कला के माध्यम से या अन्य किसी कलात्मक प्रक्रिया से किसी संस्था से धनार्जन होने की संभावना है। आप उपरोक्त कला में सफलता प्राप्त करने वाले पुरूष हैं। भाई बहन से सहयोग सुलभता से प्राप्त होगा। 'सहजगते सकृतपतौ रूप स्त्रीबंधु वत्सल: पुरूष:'

आपके नौवे भाव में बृहस्पति रहने से आप नियम और दर्शन के अच्छे ज्ञाता होंगे। 'नरपते: सचिव: सुकृतो कृती.....'

नवमा भावाधिपति गुरू (बृहस्पति) के सानिध्य में है। अत: अनेक प्रगति का कारण बन सकते हैं। भाग्येश आपको अनिष्टों से बचा सकता है। परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होगी।

नवमें भाव में स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति सुख संपत्ति की प्राप्ती करानेवाला है। अनेक अनिष्ट कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवां भाव व्यापार, श्रेणी या पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल या गति और

अधिकार को सूचित करता है।

सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवें भाव से काम (उद्योग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेशों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका, व्यवसाय या पेशा आदि का निर्णय करना चाहिए। आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष संबंधित व्यवसाय के अन्तर्गत दसवें भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, ग्रह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी पाँचवे भाव में है । बृहत पराशर होरा के श्लोकों के अनुसार आप विद्या की विभिन्न शाखाओं में कुशल होंगे। आपको पुत्र संतति होगी।

दसवें भाव में मिथुन राशी है यह राशि शास्त्रार्थ निपुण, सम्पादक और गुप्तचर बनाती है। यह आपको एक ही समय अनेक उद्योगों में काम करने की क्षमता प्रदान करती है। इस राशि का विशिष्ट स्वभाव में है इसकी आकलन शक्ति और प्रतिभा। इस राशी के प्रभाव में आनेवाले लोग बौद्धिक काम से संबंधित होते हैं। आप स्कूल अध्यापिका, प्रोफेसर, इंजीनियर, किसी कार्य के अधिकारी, भाषानुवाद, संपादन, संवाददाता, विक्रेता, पर्यटन का संचालन करने वाले, फोटोग्राफर, खुदरा प्यापारी, आदि क्षेत्रों में अच्छी तरह काम कर सकते हैं। इंजीनियरिंग, निर्वाहन, वायदा, छपाई, डाक सेवा, विद्युत, सामाचार माध्यम आदि क्षेत्रों में आप सफल हो सकते हैं।

चंद्र दसवें भाव में स्थित है। आप दुख से मुक्त, ईमानदार और अपने कार्यों में सफल रहेंगे। आप धनिक, शालीन, शक्तिशाली और उदार होंगे। चंद्र का स्वभाव चंचल और परिवर्तनशील है। जो यह बताता है की आपके उद्योग में भी अनेक परिवर्तन होंगे। आपको हर परियोजना को सूक्ष्मता से समझ कर उसमें सफलता पानी होगी। चंद्र जो एक स्त्री ग्रह है, इस कारण आपके उद्योग में किसी स्त्री का महत्वपूर्ण प्रभाव होगा। आपको अपनी माता पक्ष की ओर से धन प्राप्त हो सकता है। आप विदेशी व्यापार सम्बधों और यात्राओं से लाभ उठा सकते हैं। चंद्र आपको सार्वजनिक जीवन में सफलता के अवसर प्रदान करता है। आपके अनेक मित्र होंगे जो आपके उद्योग और उन्नति में सहायक हो सकते हैं।

कन्या राशि में स्थित चंद्र आपको पूर्णतावादी बनाएगा। आपको पीड़ित और दुखी लोगों से प्रेम और सहानुभूति होगी।

जन्मकुण्डली में उपस्थित ग्रहों के स्थानों के आधार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ अन्य नतीजे भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते हैं। आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उद्योग क्षेत्र निम्नलिखित है।

दूरसंचार, उपगृह, इन्टरनेट, नेटवर्क, स्वास्थ्य अधिकारी, आयात और निर्यात, व्यापार, राजप्रतिनिधि, राजनैतिक सेवा। गुल्म, वस्त्र, रेशा, प्रकाश विज्ञान, विक्रि।

गुरु दसवें भाव में उपस्थित है। यह आपके अच्छे परिणामों का सूचक है।

आमदनी

एकादश भाव जिसे लाभ स्थान भी कहते हैं आमदनी और आमदनी के मार्गों के विषय में सूचित करता है। यह स्थान कुंडली का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान समझा जाता है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार ग्यारहवें स्थान में स्थित कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

ग्यारहवाँ भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से आप स्वभाव से निश्छल और आत्मीयता रखने वाले व्यक्ति हैं। हर समस्या का तटस्थ भाव से अवलोकन करने में और निर्णय लेने में निपुण हैं। साहित्य के प्रति नैसर्गिक अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। हर कार्य में सफलता आपका साथ देगी। आप विजयी बनेंगे। अनेक लाभदायी संजोग प्राप्त होंगे। विवाह के बाद ऐश्वर्य में अभिवृद्धि होगी। समदर्शी के रूप में ख्याति मिलना संभव है।

ग्यारहवें स्थान का स्वामी केन्द्र में है। आप धन और संम्पत्ति पा सकते हैं।

खर्च, व्यय, नष्ट

द्वादश भाव व्यय भाव कहलाता है। खर्च और धनहानि के विषय में इसी भाव से जानकारी मिलती है।

बारहवाँ भावाधिपति चौथे स्थान पर रहने से माँ के माध्यम से मिलने वाले सुख में न्यूनता रहना संभव होगी। भू, भवन और वाहन संबंधी कार्यों में पर्याप्त संघर्ष करने के बाद ही सफलता मिलना संभव होगी।

केतु बारहवें स्थान पर रहें हैं। आप विकसित तर्क शक्ति के धनि होंगे। आप प्रभावशाली दिमाग और आत्मा वाले हैं। आप संपन्न होंगे, और बहुत पैसा खर्च करेंगे।

अनुकूल समय

उद्योग या व्यवसाय के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दशमेश, दशम भाव और लग्न में उपस्थित शुभ ग्रह, लग्न और दशम भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर दशाकाल / अपहार आदि के अध्ययन के बाद उचित और श्रेष्ट समय ज्ञात किया जाता है।

- 15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
राहु	बुध	12-05-2004	29-11-2006	अनुकूल
गुरू	शनी	18-07-2016	29-01-2019	अनुकूल
गुरू	बुध	29-01-2019	06-05-2021	श्रेष्ट
गुरू	केतु	06-05-2021	12-04-2022	अनुकूल
गुरू	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024	अनुकूल
गुरू	सूर्य	11-12-2024	29-09-2025	अनुकूल
गुरू	चंद्र	29-09-2025	29-01-2027	अनुकूल
गुरू	मंगल	29-01-2027	05-01-2028	अनुकूल
गुरू	राहु	05-01-2028	31-05-2030	अनुकूल
शनी	बुध	03-06-2033	11-02-2036	अनुकूल
शनी	गुरू	17-11-2046	31-05-2049	अनुकूल

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके करीयर के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	श्रेष्ट
07-12-2010	08-05-2011	श्रेष्ट
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	श्रेष्ट
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल

21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	श्रेष्ठ
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	श्रेष्ठ
03-06-2026	31-10-2026	श्रेष्ठ
26-01-2027	26-06-2027	श्रेष्ठ
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
29-03-2034	06-04-2035	श्रेष्ठ
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	श्रेष्ठ
12-05-2038	07-10-2038	श्रेष्ठ
04-03-2039	02-06-2039	श्रेष्ठ
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
17-02-2044	02-03-2045	अनुकूल

विवाह के लिए अनुकूल समय

सप्तमेश, सातवें भाव में उपस्थित ग्रह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति की दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर वर्तमान दशा और अपहारादी के समय का निरूपण कर विवाह के लिए अनुकूल समय ज्ञात किया जाता है।

- 18 उम्र से लेकर 50 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
राहु	केतु	29-11-2006	18-12-2007	अनुकूल
राहु	शुक्र	18-12-2007	18-12-2010	श्रेष्ठ

राहु	सूर्य	18-12-2010	11-11-2011	अनुकूल
राहु	चंद्र	11-11-2011	12-05-2013	अनुकूल
राहु	मंगल	12-05-2013	31-05-2014	श्रेष्ट
गुरु	शनी	18-07-2016	29-01-2019	अनुकूल
गुरु	बुध	29-01-2019	06-05-2021	अनुकूल
गुरु	केतु	06-05-2021	12-04-2022	अनुकूल
गुरु	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024	श्रेष्ट
गुरु	सूर्य	11-12-2024	29-09-2025	अनुकूल
गुरु	चंद्र	29-09-2025	29-01-2027	अनुकूल
गुरु	मंगल	29-01-2027	05-01-2028	श्रेष्ट
गुरु	राहु	05-01-2028	31-05-2030	श्रेष्ट
शनी	शुक्र	22-03-2037	21-05-2040	अनुकूल

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से सप्तम भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके विवाह के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	श्रेष्ट
07-12-2010	08-05-2011	श्रेष्ट
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	श्रेष्ट
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	श्रेष्ट
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	श्रेष्ट
03-06-2026	31-10-2026	श्रेष्ट
26-01-2027	26-06-2027	श्रेष्ट
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल

26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
29-03-2034	06-04-2035	श्रेष्ट
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल

व्यापार के लिए अनुकूल समय

द्वितीयेश, नवमेश, दशमेश, एकादशेश पर गुरु की दृष्टी बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवें भाव पर बृहस्पति का दृष्टि, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर व्यापार के लिए अनुकूल और श्रेष्ट समय को ज्ञात किया जाता है।

- 15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
राहु	बुध	12-05-2004	29-11-2006	अनुकूल
राहु	शुक्र	18-12-2007	18-12-2010	अनुकूल
राहु	चंद्र	11-11-2011	12-05-2013	अनुकूल
गुरु	शनी	18-07-2016	29-01-2019	अनुकूल
गुरु	बुध	29-01-2019	06-05-2021	श्रेष्ट
गुरु	केतु	06-05-2021	12-04-2022	अनुकूल
गुरु	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024	श्रेष्ट
गुरु	सूर्य	11-12-2024	29-09-2025	अनुकूल
गुरु	चंद्र	29-09-2025	29-01-2027	श्रेष्ट
गुरु	मंगल	29-01-2027	05-01-2028	अनुकूल
गुरु	राहु	05-01-2028	31-05-2030	अनुकूल
शनी	बुध	03-06-2033	11-02-2036	अनुकूल
शनी	शुक्र	22-03-2037	21-05-2040	अनुकूल
शनी	चंद्र	03-05-2041	02-12-2042	अनुकूल
शनी	गुरु	17-11-2046	31-05-2049	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों में विशेष रूप से एकादश और द्वितीय भावों से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके व्यवसाय के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल

11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	श्रेष्ठ
07-12-2010	08-05-2011	श्रेष्ठ
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	श्रेष्ठ
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	श्रेष्ठ
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	श्रेष्ठ
03-06-2026	31-10-2026	श्रेष्ठ
26-01-2027	26-06-2027	श्रेष्ठ
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
29-03-2034	06-04-2035	श्रेष्ठ
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	श्रेष्ठ
12-05-2038	07-10-2038	श्रेष्ठ
04-03-2039	02-06-2039	श्रेष्ठ
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
17-02-2044	02-03-2045	अनुकूल

ग्रह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथे भाव के अधिपति, चौथे भाव पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टी, चौथे भाव के स्वामी की गोचर स्थिति, इत्यादि विषयों को ध्यान में रख कर दशा अंतरदशा और अन्य बातों का विस्तृत अध्ययन करने के उपरान्त गृह निर्माण, निर्माणारंभ, द्वार की दिशा, मुख और चौखट आदि के मुहूर्त और समय ज्ञात किये जाते हैं, और निर्माण के लिए अनुकूल समय ज्ञात किया जाता हैं।

- 15 उम्र से लेकर 80 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
राहु	शुक्र	18-12-2007	18-12-2010	अनुकूल
गुरू	शनी	18-07-2016	29-01-2019	अनुकूल
गुरू	बुध	29-01-2019	06-05-2021	अनुकूल
गुरू	केतु	06-05-2021	12-04-2022	अनुकूल
गुरू	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024	श्रेष्ट
गुरू	सूर्य	11-12-2024	29-09-2025	अनुकूल
गुरू	चंद्र	29-09-2025	29-01-2027	अनुकूल
गुरू	मंगल	29-01-2027	05-01-2028	अनुकूल
गुरू	राहु	05-01-2028	31-05-2030	अनुकूल
शनी	शुक्र	22-03-2037	21-05-2040	अनुकूल
शनी	गुरू	17-11-2046	31-05-2049	अनुकूल
बुध	शुक्र	23-10-2052	24-08-2055	अनुकूल
बुध	गुरू	15-06-2061	21-09-2063	अनुकूल

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके ग्रह निर्माण के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	श्रेष्ट
07-12-2010	08-05-2011	श्रेष्ट
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	श्रेष्ट
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल

21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	श्रेष्ट
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	श्रेष्ट
03-06-2026	31-10-2026	श्रेष्ट
26-01-2027	26-06-2027	श्रेष्ट
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
29-03-2034	06-04-2035	श्रेष्ट
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	श्रेष्ट
12-05-2038	07-10-2038	श्रेष्ट
04-03-2039	02-06-2039	श्रेष्ट
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
17-02-2044	02-03-2045	अनुकूल
14-03-2046	22-03-2047	श्रेष्ट
19-08-2047	11-10-2047	अनुकूल
29-03-2048	13-08-2048	अनुकूल
29-12-2048	03-04-2049	अनुकूल
28-08-2049	08-03-2050	श्रेष्ट
03-04-2050	19-09-2050	श्रेष्ट
16-11-2052	15-12-2053	अनुकूल
31-01-2056	13-02-2057	अनुकूल

25-02-2058	03-03-2059	श्रेष्ठ
17-07-2059	25-11-2059	अनुकूल
05-03-2060	22-07-2060	अनुकूल

दशा / अपहार के फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

गुरु दशा

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बडों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछड़ना पड़ सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम काल सुखद हो सकता है।

बृहस्पति बलविहिन स्थिति में रहा हैं। अत: शुभ फलों में न्यूनता रहेगी।

अभ्यास क्षेत्र में निराशा का सामना करना पड़ेगा। अकारण दु:खपूर्ण घटना घट सकती है। अशुभ कार्यों के प्रति अशक्त होना पड़ेगा। उत्तर दिशा से दु:खद घटना घट सकती है। छोटी उम्र के व्यक्ति के साथ निकट का संबन्ध समस्या पैदा कर सकता है। अशुभ चिंतन के कारण मन उद्वेग से पीड़ित रहेगा। किसी भी कार्य में सफलता या विजय के चिन्ह दिखाई नहीं देंगे। स्वयं, पुरुषार्थ के माध्यम से, श्रेष्ठ चिंतन द्वारा आन्तरिक शुद्धि और शाँति प्राप्त कर सकते हैं। यह एक ही बात आपके बस में है।

- (12-04-2022 >> 11-12-2024)

बृहस्पति दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में आपको प्रतिकूल स्थिति का सामना करना होगा। आपके स्नेही मित्र या दोस्त दुश्मन में परिवर्तित होंगे। सभी दिशाओं से असुविधा होगी। आपको लज्जित बनाने वाली बातें हो सकती है। आर्थिक उन्नति ज़रूर होगी। आपको विश्लेषण तथा ध्याननिरत होने का मनोबल बढ़ेगा। नए गृह उपकरण प्राप्त होंगे। इस समय अन्य स्त्रियों से स्कावट पैदा हो सकती है। जीवन साथी या जीवन संगिनी को शारिरिक विकार का सामना करना पड़ जा सकता है।

- (11-12-2024 >> 29-09-2025)

बृहस्पति दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रुओं की शक्ति क्षीण होगी। आपको मेहमान के रूप में कई पार्टियों में तथा मनोरंजन कार्यों में भाग लेना पड़ेगा। आतिथ्य सन्मान प्राप्त होगा। आप अपनी प्रतिष्टा एवं मान्यता में वृद्धि का एहसास करेंगे। लंबी यात्राओं से होनेवाले कष्ट दूर होंगे। सामान्य स्वाधीनता बढ़ेगी। जनता के बीच सन्मान और मान्यता प्राप्त होगी।

- (29-09-2025 >> 29-01-2027)

बृहस्पति दशा में चन्द्र के अंतर में आप सब तरह के शारीरिक-भौतिक सुखों का अनुभव कर पायेंगे। लोग जो आपका सान्निध्य पसन्द न करते थे वे अब आप से मिलने जुलने की आशा के साथ आप के पास आयेंगे। यह जन सम्मति के लिए अच्छा समय है। विवाह, संतान और प्रगति विषय में भी यह समय उत्तम रहेगा।

- (29-01-2027 >> 05-01-2028)

बृहस्पति दशा में मंगल के अंतर में आत्मविश्वास जाग्रत होगा। आपकी निडरता और साहस सीमातीत योग्यता नहीं मानी जायेगी। अनिष्ट कार्यों के प्रति मन लुभायेगा। आप प्रसिद्ध होंगे। आप को बचपन की मीठी बातों का संस्मरण करने का सन्दर्भ प्राप्त होगा।

- (05-01-2028 >> 31-05-2030)

बृहस्पति दशा में राहु के अंतर में आपके द्वारा किए गये श्रेष्ठ कार्यों का विपरीत फल प्राप्त होगा। ऐसी परिस्थिति में पीछे हटना पड़ेगा। स्वनिवास स्थान से दूर हटकर शांत रहना लाभदायक होगा। पीड़ित स्वजनों की व्यथा देखकर मन व्याकुल होगा। शारीरिक विकार और मानसिक संताप होगा।

शनि दशा

शनि, दु:ख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में ऊँच-नीच, सुख-दु:ख दोनों का अनुभव होगा। सरकार या उच्च अधिकारियों के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। अनेक सेवक और सहायकों से आपको सहायता मिलेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार या सन्तान से सुख में कमी होने की संभावना है। कुछ कारणों से मन चंचल रहेगा। हाथों और पैरों में कोई पीड़ा होने की संभावना है। श्रेष्ठ नायक का पद सफलता पूर्वक संभाल पायेंगे। जीवन के उत्तरार्ध काल में शनिदशा के कारण, अपनों से बड़ी उम्र की महिला के साथ संपर्क होने की संभावना है। इस तरह का संपर्क यदि लंबे समय तक रहता तो अयोग्य बंधनों में फँसने की भी संभावना है। आप से हीन स्थिति में रहनेवाले व्यक्तियों से रिश्ता जुड सकता है। बड़प्पन, प्रतिष्ठा, सुवर्णाभूषण और धनादि की प्राप्ति होगी। धार्मिक स्थान के निर्माण में सहयोग देना संभव होगा।

शनि निर्बल दशा में रहा है। शुभ फलों की प्राप्ति में बाधा आयेगी।

शत्रुगृहों के बीच शनि की उपस्थिति है। इस कारण वह दोषग्रस्त है। इस काल में सुख की अपेक्षा करना व्यर्थ है।

पौष्टिक आहार और नियमित व्यायाम के अभाव के कारण शारीरिक दुर्बलता का अनुभव होगा। कोर्ट-कचहरी के धक्के खाने पड़ सकते हैं। अपनों से बड़ों के साथ झगड़ा हो सकता है। वियोग के संजोग सृजित होंगे। वियोग का दु:ख भोगना पड़ सकता है। प्रगति और सफलता के मार्ग में अनेक बाधायें आयेगी। उन बाधाओं से बचने के लिए अति श्रम करना पड़ेगा। दु:ख भोगना पड़ेगा। अकारण क्रोध उत्पन्न होगा।

- (31-05-2030 >> 03-06-2033)

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप क्रोधी और झगड़ालू बनेंगे। छोटे छोटे झगड़ों से मन कलुषित होगा। इस प्रकार के व्यवहार के कारण बाद में पछताना होगा। आपको दूर देशों की यात्रा करनी पड़ेगी। आपका निवास स्थान अपने घर से दूर रहेगा। नीच वृत्ति के लोगों का सहवास रखना पड़ेगा।

- (03-06-2033 >> 11-02-2036)

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप को अनेक प्रकार के लाभ होंगे। आपकी इच्छाएँ सफल होगी और लक्ष्यप्राप्ति भी होगी। प्रगति की अपेक्षा कर सकते हैं। कर्तव्यबोध जाग उठेगा। प्रोत्साहन और सहायता चारों ओर से आपको प्राप्त होगी। अप्रतिक्षित लोगों से सहायता मिलेगी। निवास स्थान में बदली होगी। नौकरी में स्थानान्तरण की आशंका है।

- (11-02-2036 >> 22-03-2037)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दु:ख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आपकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

- (22-03-2037 >> 21-05-2040)

शनि की दशा में शुक्र के अंतर में आप श्रेष्ठ मित्रों से संबंध स्थापित करेंगे। सहायता की कमी नहीं रहेगी। आपके सहयोगी की सहायता, आपकी प्रगति में प्रमुख स्थान लेगी। घर की मरम्मत एवं नवीनीकरण संभव है। साहित्य में रुचि भी दिखायी देगी। विवाहादि मांगलिक कार्य होंगे।

- (21-05-2040 >> 03-05-2041)

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपके कारण निकट के संबन्धी पीड़ित होंगे। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। स्नेहजनों के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। यह आपके जीवन तथा संबंधो पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। आप अपनी नौकरी में निराश हो जायें तो फल बहुत बुरा होगा। इसलिए सतर्क रहें। कठिन परिश्रम करके किसी न किसी तरह मन का संतुलन बनाये रखना है। मनोबल को स्थिर बनाना आवश्यक है।

- (03-05-2041 >> 02-12-2042)

शनि की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में स्थिति दु:खद होगी। जीवन में मृत्युतुल्य दु:खद घटनायें घटित हो सकती हैं। अपने मन को श्रेष्ठ विचारों से शान्त रखना आवश्यक है। प्रारंभ में ही प्रश्नों को ठीक तरह हल न करने पर जन्मस्थान छोड़कर जाना पड़ेगा। विरक्त और घृणाशील स्थिति में वृद्धि होने की संभावना है। किसी के वियोग की संभावना है।

- (02-12-2042 >> 11-01-2044)

शनि की दशा में मंगल के अंतर में आपको दूरयात्रा करके विदेश जाने का योग है। बीमार पड़ना भी संभव है। सब कुछ नष्ट होने का भ्रम उत्पन्न होगा। पर इस काल के अन्त में प्रगति होगी। रोग या चोट के कारण सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

● (11-01-2044 >> 17-11-2046)

शनि की दशा में राहू की अन्तर्दशा में ऊँचाइयों से गिरने की संभावना है। आपको हर कदम पर सतर्क रहना होगा। आपके शत्रुओं के पास आक्रमण करने का अच्छा मौका है। आध्यात्मिक और भक्तिपूर्ण कार्य आपकी भलाई के लिए योग्य रहेंगे।

● (17-11-2046 >> 31-05-2049)

शनि की दशा में बृहस्पति का अंतर आपके लिए अनुकूल रहेगा। अनेक संतुष्टिप्रद कार्य घटित होंगे। आपका परिश्रम और क्रियाशील स्वभाव आसानी से आपको फल की और ले जायेगा। कार्यशक्ति में वृद्धि होगी। अनपेक्षित स्थानों से आपको सहायता मिलती रहेगी। विवाहकार्य आयोजन का मौका मिलेगा। उन्नति और प्रगति का समय है।

बुध दशा

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। ज़मीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक हों तो उपरोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। नए भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

● (31-05-2049 >> 27-10-2051)

बुध दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप दिमाग के बल पर सभी कार्य ठीक तरह से कर सकेंगे। आप की बुद्धि का विकास होगा। आपका मन और विचार सुशोभित जीवन की ओर रहेंगे। ज्ञान भंडार में वृद्धि होगी। आप समाज के विज्ञ लोगों के संपर्क में आयेंगे। वैवाहिक कार्य मंगलमय रहेंगे। शुभ कार्यों का निर्वाह होगा। लेखन कार्य से सहयोग प्राप्त होगा।

● (27-10-2051 >> 23-10-2052)

बुध दशा में केतु की अन्तर्दशा में दुखों का अनुभव होगा। परेशानी सहनी होगी। हर कार्य अपनी इच्छा के प्रतिकूल रहेगा। समय समय पर बीमारी से अस्वस्थ रहना पड़ेगा। मानसिक तनाव में कमी लाने के लिए ईश्वर चिंतन ही एक मात्र उपाय है।

● (23-10-2052 >> 24-08-2055)

बुध दशा में शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आप अपने आप को स्थिर और प्रफुल्लित अनुभव करेंगे। इस समय में आप अपने समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में जाने जायेंगे। शारिरीक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा। लोकोपकारी कार्यों में आपको आनंद प्राप्त होगा। घर में पुनर्रचना का कुछ काम चल सकता हैं। आपके परिवार में कुछ शुभ कार्य हो सकते हैं।

● (24-08-2055 >> 30-06-2056)

बुध दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपको अनुभव होगा कि आपकी उपलब्धीयां आपको खुशियां प्रदान कर रही हैं। आपके कुछ रिश्तेदार और मित्र किसी संकट में हो सकते हैं और सहायता हेतू वे आपके पास आ सकते हैं। आप महत्वपूर्ण पारिवारीक और सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेंगे। नई संपत्ती खरीदने और यात्रा के भी संकेत हैं। आप अपने शौक पूरे करने में समय बिताएंगे।

● (30-06-2056 >> 29-11-2057)

बुध दशा में चंद्र की अन्तर्दशा आपको चर्मरोग दे सकती हैं और आपको इससे काफी सावधानी बरतनी हैं। आप अपने पालतु जानवरों के साथ समय बिताएंगे। उसी समय आपको अनजाने जानवरों द्वारा संक्रमण से सुरक्षित रहना चाहिए।

● (29-11-2057 >> 26-11-2058)

बुध ग्रह में मंगल की अन्तर्दशा आपको सरदर्द उत्पन्न कर सकती हैं या सर में मामुली चोट आ सकती हैं। निवास से संबंधीत स्थानांतर हो सकता हैं। इस अवधी के दौरान डकैती से सावधान रहना चाहिए।

- (26-11-2058 >> 15-06-2061)

बुध दशा में राहू की अन्तर्दशा आपके विरोधी आपको अप्रत्याशित रूप से मुसिबत में डाल सकते हैं। शस्त्रधारी लोगों के साथ समय ना बिताने के लिये आपको सावधान रहना चाहिये। बिजली के उपकरण और आग से आपको सावधान रहना चाहिए। अंधेरे में यात्रा करना आपको टालना चाहिए। आपको सिखने में रूची रहेगी और पैसों के व्यवहार में आप चतुर रहेंगे। आपकी वित्तीय स्थिती समाधानकारक रहेगी।

- (15-06-2061 >> 21-09-2063)

बुध ग्रह में बृहस्पती की अन्तर्दशा में आप आनंद रहेंगे। आपका शारिरीक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और आप हमेशा आनन्दी रहेंगे। आप दुसरों का सम्मान करने में संकोच नहीं करेंगे और इस वजह से आपको दुसरों से मदद मिलेगी। आप विवाह जैसे शुभ कार्यों में शामिल होंगे।

केतु दशा

- 31-05-2066

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण करना आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने के लिए किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। अपवाद और शंका का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करवाना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता है तब धन, पारिवारिक सुख आदि देनेवाला होता है। इस दशा में गरीबी, बुद्धिशून्यता और शारीरिक अस्वस्थता साधारण होगी। बालावस्था में यदि केतु दशा आती हैं तो शिक्षण कार्य में अनेक बाधाएं आती हैं। आपकी आयु यदि जीवन के पूर्वार्ध काल व्यतीत कर चुकी है तो, किसी बंधु से बिछड़ना या वंचित होना संभव होगा। हर समस्या से बचना कठिन है। मानसिक बोझ और मनोव्यथा अनुभव होने की संभावना है। इस दशा का पूर्व ज्ञान होने पर कुछ कठिनाइयों से बच सकते हैं। भक्तिपूर्ण जीवन से मानसिक शाँति प्राप्त होगी। महिलाओं के निमित्त अन्य लोगों से संबन्ध बिगड़ सकते हैं। मानहानी, धन नाश और दाँत का दर्द सर्वसाधारण होगा। कुछ समय बाद असाधारण संपत्ति सुख और चारों ओर आनन्दपूर्ण वातावरण की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

केतु वर्गबल से सशक्त हो रहा है। इस दशा में आप शुभ फलों की आशा कर सकते हैं।

इस दशा में आप पहले से अधिक दार्शनिक और ईश्वरोपासक बनने की संभावना रखते हैं। औषधियों से आपको अच्छी कमाई हो सकती है। आपको पारिवारिक सुख और सुविधा मिलेगी। आडंबरयुक्त जीवन प्रिय लगेगा। धार्मिक कार्यों में बड़ा ध्यान होगा। इस दशा में तन्दुरूस्त रहना संभव है। सुख और शान्ति से दिन बीतेंगे।

शुक्र दशा

- 31-05-2073

पहले किए हुए अच्छे कार्यों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कलाओं में विशेष रूचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में हो जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल आपको मिलेगा। भिन्न भिन्न सवारियों से कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगा। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या भी आप के लिए बाधा बनेगी। संबन्धियों से अलग रहना पड़ेगा। कभी कभी मन की अशान्ति भी अनुभव होगी। विवाह के योग्य आयु होने पर ही जीवन साथी चुनने का योग्य समय माना जा सकता है। पत्नी समेत आनंदमय जीवन व्यतीत होगा। आयु अनुसार सुखद दांपत्य जीवन और संतान प्राप्ति का योग है। दुष्ट व चरित्रहीन व्यक्तियों से दूर रहना ही उचित होगा। सम्मान मिलेगा।

ग्रह दोष और उपाय

मांगलिक दोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को बहुत अधिक महत्व प्राप्त है। मंगल या कुज का विवाह संबन्धी विषयों तथा गुणमेंलन आदि के विश्लेषण में बहुत महत्व है। सामन्य तया जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें या द्वादश भाव में हो तो मंगल दोष माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों में मंगल के प्रभाव को बताते हुए अनेक नियमों का संग्रह दिया गया है। उन नियमों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका दुष्प्रभाव कुछ कारनों से क्षीण हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विश्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में सातवाँ स्थान पर है।

यह स्थिती दोषपूर्ण है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की स्थिति के अनुसार मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

स्पष्टीकरण

बिना थके प्रयास करते रहना आपके सुखी पारिवारिक जीवन का महत्वपूर्ण घटक है। आशावाद और मेहनत से कठिनाईयों पर काबू पाने में मदद मिल सकती है। हानी रोकने हेतू,पैसो के मामलों में जादा ध्यान देना चाहिए। आप साहसी स्वभाव और प्रयास से कठिनाई पर हल निकालने में सक्षम है। निर्णय लेते समय साथी और बच्चो की पसंद पर ध्यान देने से आपके पारिवारिक जीवन में सुधार आयेगा। आपने पारिवारिक मामलों में असहमती नही दिखानी चाहिए। बुरी साथ और बुरी आदतें टालने से आपके जीवनसाथी को आपके बारे में अच्छा लगेगा।

उपचार

सातवे घर के मंगल के अशुभ परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते हैं।

कुज दोष प्रभावों को कम करने के लिये 8 सुमंगली स्त्रीयों को हल्दी, कुमकुम केले/फल, हल्दी लिप्त नारीयल इत्यादी भेट दें।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी गति परस्पर संबंधित है और एक ही अंग के भाग होने के कारण दोनों हर समय वह एक दुसरों कें विरुद्ध होते है, किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है। सामान्य रूप सें, राहु सकारात्मक है और गुरू के प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनी के विघ्न को दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इस प्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है। इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद की सूक्ष्म प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी के लिए माना जाता है।

राहु दोष

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष नही है।

राहु दोष के उपाय

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष न होने से, आपको कोई उपाय करने की जरूरत नही हैं।

केतु दोष

आप अच्छी तरीके से खर्चा करके पैसों के मामलों में स्थिरता पा सकते हैं। पैसा कमाना और परिवार को सुख देना आपके लिए कठीन नही होगा। विनयशील रहने से कभी-कभी बुरा समय और नुकसान हो सकता है। आप मुश्किलों और ऋण पर दृढता से जीत पा सकते हैं। साथी के साथ अनुभव साझा करने से मन की शांती मिलेगी और कार्य अच्छे होंगे। आपने सुखी और स्वास्थ्य जीवन हेतु बुरी संगत और परिणाम टालने चाहिए। आपको आंखे छोड कर शरीर के उपरी भाग के विकार हो सकते हैं। पेट का निचला भाग और प्रोस्ट्रेट भाग की परवाह करें।

केतु दोष हेतु उपाय

केतु दोष के बुरे परिणाम कम करने हेतु, आप निचे दिये उपाय कर सकते हैं। सफेद कपडे की बॅग में कुछ ग्राम चना लें और सोने से पूर्व उसे तकिए के निचे रखें। आपने वह सुबह उठकर कौवे को डालने चाहिए। ऐसे लगातार 9 दिन करें, और अंतीम दिन भगवान गणेशजी के मंदीर में जाकर शाम के समय दर्शन लें। स्वेच्छा से दान करके परिक्रमा करें। केतु कवच यंत्र लेकर समर्पीत भाव से पहने। केतु के लिए आराधना देवता - भगवान गणेश और हनुमान। उनके मंदीर में दर्शन लेकर स्वेच्छा से दान करें। घर मे सुदर्शन चक्र रखें और केतु दोष के परिणाम कम करने हेतु निचे दिया श्लोक पढें।

अस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रथ्याधिदेवता साहिथम
केकीग्रम धयायामि आवाहायामी

श्रीं ॐ नमो भगवती श्री शूलिनी
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायी सुप्रदा
सर्व भूतादि दोषाया दोषाया
केतुरग्रह निपीडीताथ नक्षत्रे
राशोजाथाम सर्वनाम मम
मोक्ष मोक्ष स्वा:

परिहार

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने हस्त नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र अधिपति चन्द्र है। समालोचन करने पर आप गौरव भाव प्रकट करेंगे। यह आपके सफलता के मार्ग में स्कावट बन जाएगा। जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ ग्रहों की दशा आपके लिए प्रतिकूल है। हस्त नक्षत्र होने के बावजूद राहु, शनि और केतु दशा में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस समय आपके विचार और कार्य में अनेक प्रकार का प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई देगा। ऐसी परिस्थिति भी होगी जब आप अपने बुद्धि के साथ स्वार्थता को भी नियुक्त करेंगे। इस समय आप दूसरों के गलतियों को संकेत करने में दिलचस्प होंगे। जीवन में आपको ऊंचाई और नीचाई के अनुक्रमण का अनुभव होगा। अपने घर से दूर रहना पड़ेगा। इस समय लाभहीन चीजों की ओर साधारण रूप से ज्यादा झुकाव होगा।

कन्या जन्म राशी का अधिपति बुध है। ऐसी परिस्थिति भी होगी जब आपको विधा और व्यवहार के बारे में व्यक्त अनुमान प्रस्तुत करना पड़ेगा। आपका विचार किसके लिए लाभदायक है, यह जानना जरूरी है। धार्मिक कार्यों का परिणाम पाने में देर लगेगी। स्वाती, अनुराधा, मूल, अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र सामान्य रूप से अनुकूल नहीं होंगे।

इस प्रतिकूल दशा में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यत: विरुद्ध नक्षत्रों पर अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें। इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादाओं का प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते हैं।

प्रतिकूल दशा में चन्द्र और माता देवी की प्रार्थना करता लाभदायक है। माता देवी के आर्शिवाद के लिए हस्त, श्रवण और रोहिणी नक्षत्र के दिवस पर मंदिर में दर्शन करना चाहिए। हस्त नक्षत्र और सोमवार जिस दिन साथ आते है, उस दिन विशुद्धता के साथ उपवास रखना उचित होगा।

अच्छे फल प्राप्ती के लिए रोज चन्द्र की प्रार्थना करनी चाहिए। इसके अलावा रोज पुराणों और धार्मिक पुस्तकों का पारायण करना चाहिए। वस्त्रों को चुनते समय सफेद और हरे रंग को ज्यादा महत्व देना चाहिए। यह चन्द्र को प्रसन्न करने के लिए सहायक होगा।

इसके अलावा ग्रह के अधिपति को प्रसन्न करने का लक्ष्य आपके ऊपर भाग्य को वर्षित करेगा।

हस्त नक्षत्र के अधिपति सूर्य है। सूर्य को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र का विश्वास से अलापन करना चाहिए।

1 ॐ विभ्राद् भ्रिहन्तपिभतु सौम्यम् मद्धायुर्धदध
ध्यज्ञपता वर्विहुतं वातजुतोयो
अभिरक्षतित्मन प्रजा: पुपोष पुरुध विराजति

2 ॐ सवित्रे नम:

इसके अलावा, जानवरों, पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है। मुख्यत: हस्त नक्षत्र के जानवर गाय का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपको जीवन में ऐश्वर्य और समृद्धि की प्राप्ति होगी। हस्त का औधोगिक पेड़, अंभषम् पेड और उसके शाखाओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी, कौआ को पीड़ा नहीं देनी चाहिए। हस्त नक्षत्र का मूलतत्व अग्नि है। अग्नि देव की पूजा करने से और दिया जलाने से इस जन्म नक्षत्र के लोगो को भाग्य प्रधान करेगा।

दशा परिहार

दशा के अशुभ प्रभावो का परिहार हर ग्रह की दशा मे भाग्य और दुर्भाग्य के सामान्य प्रभाव जन्मकुंडली मे स्थित ग्रहो के स्थानो पर आधारित है। शुभ और अशुभ ग्रहो का प्रभाव यह सूचित करता है कि कौनसा दशा-समय आपके लिए अनुकूल नही है। प्रतिकूल दशा-समय के अशुभ प्रभावो को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का अनुष्ठान करना पड़ेगा। जन्मकुंडली मे स्थित प्रतिकूल दशा-समय और उसके लिए किए जाने वाली धार्मिक विधियो के विषय में यहाँ उल्लेख किया गया है।

- दशा :शनी

आपकी शनी दशा 31-5-2030 को शुरू होती है।

आपका जन्म नक्षत्र हस्त है। दशा के अधिपति का अशुभ योग है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस जन्मकुंडली की ग्रहस्थिति के अनुसार, आपको शनी दशा में प्रतिकूल स्थितियो से गुजरना पड़ेगा। अपको अप्रत्याशित स्कावटों तथा कठिनाइयों का सामना करना

पड़ेगा। आप प्रतिकूल स्थितियों से लड़ नहीं सकते। अनावश्यक परेशानी आपकी नींद में बाधक होगी। शनी दशा के अशुभ प्रभावो की तीव्रता शनी के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती है। शनी के प्रतिकूल स्थान में होने से जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ कहा गया है। जब शनी कमजोर हो तो, अक्सर जीवन में आने वाली समस्याओं का धैर्यपूर्वक सामना करना चाहिए। जरूरी नहीं है की हमेशा आपकी अपेक्षा और आशा के अनुरूप हर काम हो जाये इसलिये कई बार आपको वित्तीय परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है। इस समय बुजुर्गों के साथ आपके सम्बंधों में तनाव आ सकता है। सामान्य रूप से आपके सामाजिक व्यवहार में उर्जा की कमी महसूस होगी। भोजन पोषक और स्वस्थ्यवर्धक हो इसका ध्यान रखें। इस समय रोगों के प्रतिरोध की शक्ति अत्यंत प्रभावित होगी। आप रोगों से जल्दी छुटकारा नहीं पा सकेंगे। शनी के बुरे प्रभाव से आपको शारीरिक व्याधियों से जूझना पड़ सकता है। जब शनी प्रतिकूल स्थिति में हैं आपकी विचारशक्ति और संयम पर बुरा असर पड़ेगा। आपको अनावश्यक मानसिक परेशनियों से दूर रहना चाहिए। अगर आप इस प्रकार के समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि शनी प्रतिकूल है। जिन लोग इस प्रकार की कठिनाइयों को महसूस कर रहे हैं उन्हें शनी को अनुकूल करने के कुछ उपाय अपनाना चाहिए। शनी को अनुकूल रखने से आपको उसके अशुभ प्रभावों को कम करने का प्रयत्न कर जीवन सुखद बनाना चाहिए। इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर शनी के प्रतिकूल होने से इसकी शांति के लिए जिन उपायों को करना चाहिए उनका विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

वस्त्र

नीला और काला रंग शनी को प्रिय है। इन रंगों के वस्त्र पहनने से शनी ग्रह को अनुकूल किया जा सकता है। अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए आपको शनिवार को नीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए।

देव पूजा, आराधना, उपासना

शनी दशा के अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिए भगवान शिव और श्री अय्यप्पास्वामी की पूजा करनी चाहिए। कुछ शास्त्रों ने भगवान हनुमानजी की पूजा करने को कहा हैं। केरल के ज्योतिषि भगवान अय्यापा की उपासना की सलाह देते हैं। काला या नीला वस्त्र पहनकर व्रत लेकर अय्यप्पास्वामी के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल के मधुर रस से अभिषेक; शनी ग्रह को अनुकूल करने का मार्ग हैं।

उपवास

उपवास खाद्य पदार्थों के सेवन में किफायत के अतिरिक्त पचनसंस्थान को स्वस्थ रखने के उद्देश से तथा धार्मिक आस्था से किया जाने वाला लंघन है। इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। इसलिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए। ग्रहों के अनुकूलन के लिए किये जाने वाले उपवास में ठोस अन्न आदि खाद्य, मांसाहार, मदिरा सेवन, आदि निषिध मने गए हैं अतः इनके सेवन वर्जित है। उपवास के दिन सौम्य, सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। अधिक तीखे, चटपटे, खट्टे, तथा पचने में भरी खाद्य उपवास में वर्जित माने जाते हैं। फलाहार तथा कुछ हलकी खाद्य सामग्री का सेवन किया जा सकता है। ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको ग्रह से संबंधित दिन अर्थात वार को उपवास रखना चाहिए। संबंधित ग्रह के देवी या देवता के मंदिर में पूजा अर्चा उपवास का एक अंग है। उपवास में क्रोध, द्वेष, इर्षा आदि से स्वयं को दूर रखें और ब्रम्हचर्यका पालन करें। उपवास का मुख्य लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए। शनी को अनुकूल करने के लिए आपको शनिवार में उपवास रखना चाहिए। आपको शनी मंदिर या हनुमानजी के मंदिर में दर्शन करना चाहिए तथा अपनी क्षमता के अनुसार दान करना चाहिए। इस समय श्री अयप्पास्वामी के मंदिर में जाकर अपने योग्यता के अनुसार दीप और इल्लू पायस का दान करना चाहिए।उपवास के समय मदिरापान, मासाहारी पदार्थ और मादक चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए। इन दिनों में सात्विक खाद्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जिन पचने में आसान हों उनका सेवन करना चाहिए। अनाज, तलेपदार्थ, गरम और खट्टे खाद्य पदार्थ टालने चाहिए। आप अंशत: या पूरी तरह अशुभ प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते हैं। उपवास के समय धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं हैं। आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और व्यवहार में संयम रखेंगे। उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए। शनी ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको शनिवार में उपवास रखना चाहिए। इस समय श्री अय्यप्पा भगवान के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल का मधुर रस से अभिषेक आदि उचित हैं। शनिवार के दिन पीपल के पेड़ की परिक्रमा करना लाभदायक है। समय उपवास रखते समय अय्यप्पा मंदिर में दर्शन करना चाहिए। उपवास के समय मदिरा, माँस पदार्थ और मादक करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए।

दान

स्वेछासे से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार और ग्रहों की शान्ति का का श्रेष्ठ मार्ग है। शनी ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको तिल, काला गाय, नील माणि, तिल का तेल, लोहे से बना शनी का मूर्ति, काला रेशम, काला धान्य आदि को दान देना चाहिए। गरीबों को भोजन दान देना उचित हैं। एक बरतन, में थोड़ा तिल का तेल डालकर अपने प्रतिबिंब को देखकर उस तेल को दान देना चाहिए। इससे अच्छा फल प्राप्त होगी।

पूजा

शनी को अनुकूल करने के लिए कुछ पूजा विधियों का नीर्देश किया है। नीलकमल, या नीला जपाकुसुम आदि से शनी पूजा किया जाता हैं। तिल और उड़द से

अभिषेक भी किया जाता हैं। नव ग्रहों के मदिर में दर्शन करना, शनी ग्रह को नील कमल से आभूषित करना और दिया जलाना लाभदायक हैं। निपुण ज्योतिषियों के मार्गदर्शन के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए।

मन्त्रों का जाप

जो लोग अनुष्ठान यज्ञ आदि कर्म किसी कारणवश करने में असमर्थ हों वे निम्न मन्त्रों का पाठ कर शनी के दोष का परीहार कर सकते हैं और शनी का अनुग्रह और कृपा जीत सकते हैं।

ॐ सूर्यपुत्राय विहमहे
शनैश्चराय धीमहि
तन्नो: मन्द: प्रचोदयात्

अत्यंत विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का जाप करने से ही आपको फल सिद्धी प्राप्त होगी।

शनी गृह का मौलिक मत्र शनी को प्रसन्न करने के लिए शनी के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है

ॐ शनैश्चराय नम :
ॐ शान्ताय नम :
ॐ सर्वाभिष्ट प्रदायिने नम :
ॐ शरण्याय नम :
ॐ वरेण्याय नम :
ॐ सर्वेशाय नम :
ॐ सौम्याय नम :
ॐ सुरवन्द्याय नम :
ॐ सुरलोक विहारिणे नम :
ॐ सुखासनोपविष्टयान नम :
ॐ सुन्दराय नम :
ॐ मन्दाय नम :

अंगुलिक यंत्र

अगुंलिक यंत्र ग्रहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय हैं। बुध को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यन्त्र नीचे प्रस्तुत किया गया हैं-

12	7	14
13	11	9
8	15	10

इस यन्त्र को विशुध्द मन से पहनने से अशुभ प्रभावों का दूर किया जा सकता है और यह आपके मन को एक नई उर्जा प्रदान करता हैं। यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहते हैं तो आप इसको एक कागज़ के तुकडे पर लिखकर अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबल पर रखना चाहिए।

ऊपर दिए गए परिहार का 31-5-2049 तक आचारण करना चाहिए।

दशा :केतु

आपकी केतु दशा 31-5-2066 को शुरू होती है।

आपका जन्म नक्षत्र हस्त है। केतु बारहवाँ भाव में है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस कुंडली की ग्रह स्तिथि के आधार पर केतु ग्रह की दशा में आपको कुछ प्रतिकूल परिस्तिथियों का सामना करना पड सकता है। इस अवधि में आपकी अंतर चेतना तथा कल्पनाशक्ति बुरी तरह प्रभावित होगी आपके हर उपक्रम की सफलता के प्रति एक डर सा बना रहेगा। आपकी एकाग्रता और कार्यक्षमता दोनों का ह्रास होगा। केतु दशा के अशुभ प्रभावो की तीव्रता केतु के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती है। जब केतु प्रतिकूल स्थान से हैं जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ कहा गया हैं। यदि केतु कमजोर हो तो आपके निर्णय नकारात्मक और इनमे विरोधाभास हो सकता है। अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए आपको दूसरो पर निर्भर रहना पड़ेगा। आत्मरक्षा के प्रति आपको सचेत रहना होगा। आप इस समय भुतकाल में जीना पसंद करेंगे। अपने कार्य कलापों को अपने तक सिमित रखने

का प्रयत्न करें। ज्वर आदि व्याधियों के होने की संभावना हैं। आंव और पचनसंस्थान संबधी बीमारीयों के प्रति सचेत रहें विशेष रूप से यात्रा के समय खान पान का ध्यान रखें। जब केतु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको दूसरों की जायदाद में रूचि बढ़ सकती हैं। वैवाहिक जीवन सुचारू रखने के लिए आपको संघर्ष करना पड़ेगा। अगर आप इस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि केतु प्रतिकूल हैं। जो इस प्रकार कि समस्या के अधीन हों उन्हें केतु को अनुकूल करने के लिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए। केतु को अनुकूल रखने से उसके अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है और जीवन सुखमय हो सकता है। इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर केतु दशा में जिन विशिष्ट उपायों का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ विवेचन किया गया हैं।

वस्त्र

लाल रंग के वस्त्र पहनने से केतु को शांन्त किया जा सकता है। आप काले रंग का वस्त्र भी पहन सकते हैं। मंगलवार में आपको लाल रंग का वस्त्र पहनना चाहिए। पूजा करते समय काला और लाल रंग का वस्त्र पहनना उचित है।

देव पूजा, आराधना, उपासना

केतु दशा के अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिए गणेश भगवान का पूजन करना चाहिए। अपने जन्म नक्षत्र में गणेशजी का होम करना, व्रत लेकर चतुर्थी तिथि को गणेश मंदिर में दर्शन, गणेश भगवान का स्तुतिगान करना आदि अनुष्ठानो से केतु दशा के अशुभ प्रभावों को कम किया जा सकता है। कुछ ज्योतिषि चामुण्डा देवी की पूजा करने की सलाह देते हैं। जिनका केतू उच्च राशी में हैं उनको गणेश भगवान का और जिनका केतु नीच राशी में हैं उनको चामुण्डा देवी की पूजा करनी चाहिए।

प्रातकालीन प्रार्थना

इस प्रातःकालीन प्रार्थना अशुभ प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन तथा शरीर को नयी उर्जा प्रदान करता है अपने शरीर को शुध्द करने के बाद गुरू से अनुग्रह की याचना करें। मन से सभी चिंताओं से मुक्त कर एकाग्रता से प्रार्थना करनी चाहिए।

सूर्याय शीतरूचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यम नमो भगवते गुरवे वराय
नारायणो ही लोकानाम् सृष्टिस्थित्यान्तकारक:
शखनोनिष्टसभुतम् दोषजातम् निरस्यतु

इस प्रार्थना को हर दिन नीद से उठते ही शाथ्या मे पुरब की दिशा मे बैठकर आलापन करना चाहिए।

उपवास

उपवास खाद्य पदार्थों के सेवन में किफायत के अतिरिक्त पचनसंस्थान को स्वस्थ रखने के उद्देश से तथा धार्मिक आस्था से किया जाने वाला लंघन हैं। इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य हैं अपने मन और शरीर को शुध्द करना। इसलिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए। ग्रहों के अनुकूलन के लिए किये जाने वाले उपवास में ठोस अन्न आदि खाद्य, मांसाहार, मदिरा सेवन, आदि निषिध माने गए हैं अतः इनके सेवन वर्जित है। उपवास के दिन सौम्य, सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। अधिक तीखे, चटपटे , खट्टे, तथा पचने में भरी खाद्य उपवास में वर्जित माने जाते हैं। फलाहार तथा कुछ हलकी खाद्य सामग्री का सेवन किया जा सकता है। चूँकि केतु के लिए किसी विशेष दिन का प्रावधान नहीं है, अतः आप अपने जन्मवर या मूल आदि नक्षत्रो में उपवास रखें।

दान

स्वेछा से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार और ग्रहों की शान्ति का का श्रेष्ठ मार्ग हैं। केतु को अनुकूल करने के लिए आप बकरी, आयुध, हरितमणि, लाल या काला रेशम आदि दान किया जा सकता हैं। सोना, चाँदी या पंचधातु से बना मूर्ति दान देना लाभदायक है।

पूजा

केतु को अनुकूल करने के लिए कुछ पूजा विधियों को निर्देश किया है। केतु पूजा के लिए लाल और काले फूलों का उपयोग किया जाता हैं। जन्म नक्षत्र के दिवस से या केतु दशा के शुरूआत में आप केतु पूजा किया जा सकता है। दर्भ के दान को इस कर्म में विशेष महत्व हैं। निपुण ज्योतिषियों के मार्गदर्शन के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए।

मन्त्रों का जाप

केत का मत्र आलापन जो लोग अनुष्ठान यज्ञ आदि कर्म किसी कारणवश करने में असमर्थ हों वे निम्न मन्त्रों का पाठ कर केतु के दोष का परीहार कर सकते हैं और केतु का अनुग्रह और कृपा जीत सकते हैं।

ॐ चित्रगुप्ताय विदमेह
चन्द्रउच्चाय धीमहि
तन्नो: केतु प्रचोदयात्

अत्यंत विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का जाप करने से ही आपको फल सिद्धी प्राप्त होगी।

केतु को प्रसन्न करने के लिए केतु के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है

ॐ केतवे नम :
ॐ स्तूलशिरसे नम :
ॐ शीरो मात्राय नम :
ॐ द्वजकृतये नम :
ॐ सिहिकासुरिगर्भसम्भवाय नम :
ॐ महाभीतिकराय नम :
ॐ चित्रवर्णाय नम :
ॐ श्री पिगल्लाक्षाय नम :
ॐ भुल्लदुम्सकशय नम :
ॐ तीक्ष्णदष्ट्राय नम :
ॐ महारागाय नम :
ॐ रक्तनेत्राय नम :

- अंगुलिक यंत्र

अगुंलिक यंत्र ग्रहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय हैं। बुध को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यन्त्र नीचे प्रस्तुत किया गया हैं-

14	9	16
15	13	11
10	17	12

इस यन्त्र को विशुध्द मन से पहनने से अशुभ प्रभावों का दूर किया जा सकता है और यह आपके मन को एक नई उर्जा प्रदान करता हैं। यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहते हैं तो आप इसको एक कागज़ के तुकडे पर लिखकर अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबल पर रखना चाहिए।

ऊपर दिए गए परिहार का 31-5-2073 तक आचारण करना चाहिए।

दशा और भुक्ती का विवरण (साल = 365.25 दिन)

- जन्म के समय दशा का भोग्य काल = चंद्र 0 साल, 4 मास, 28 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्त्य
चन्द्र	सूर्य	01-01-1989	31-05-1989
मंगल	मंगल	31-05-1989	27-10-1989
मंगल	राह्	27-10-1989	14-11-1990
मंगल	गुरु	14-11-1990	21-10-1991

मंगल	शनि	21-10-1991	29-11-1992
मंगल	बुध	29-11-1992	26-11-1993
मंगल	केतू	26-11-1993	24-04-1994
मंगल	शुक्र	24-04-1994	24-06-1995
मंगल	सूर्य	24-06-1995	30-10-1995
मंगल	चन्द्र	30-10-1995	30-05-1996
राह्	राह्	30-05-1996	10-02-1999
राह्	गुरू	10-02-1999	06-07-2001
राह्	शनि	06-07-2001	12-05-2004
राह्	बुध	12-05-2004	29-11-2006
राह्	केतू	29-11-2006	18-12-2007
राह्	शुक्र	18-12-2007	18-12-2010
राह्	सूर्य	18-12-2010	11-11-2011
राह्	चन्द्र	11-11-2011	12-05-2013
राह्	मंगल	12-05-2013	31-05-2014
गुरू	गुरू	31-05-2014	18-07-2016
गुरू	शनि	18-07-2016	29-01-2019
गुरू	बुध	29-01-2019	06-05-2021
गुरू	केतू	06-05-2021	12-04-2022
गुरू	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024
गुरू	सूर्य	11-12-2024	29-09-2025
गुरू	चन्द्र	29-09-2025	29-01-2027
गुरू	मंगल	29-01-2027	05-01-2028
गुरू	राह्	05-01-2028	31-05-2030
शनि	शनि	31-05-2030	03-06-2033
शनि	बुध	03-06-2033	11-02-2036
शनि	केतू	11-02-2036	22-03-2037

शनि	शुक्र	22-03-2037	21-05-2040
शनि	सूर्य	21-05-2040	03-05-2041
शनि	चन्द्र	03-05-2041	02-12-2042
शनि	मंगल	02-12-2042	11-01-2044
शनि	राह्	11-01-2044	17-11-2046
शनि	गुरु	17-11-2046	31-05-2049
बुध	बुध	31-05-2049	27-10-2051
बुध	केतू	27-10-2051	23-10-2052
बुध	शुक्र	23-10-2052	24-08-2055
बुध	सूर्य	24-08-2055	30-06-2056
बुध	चन्द्र	30-06-2056	29-11-2057
बुध	मंगल	29-11-2057	26-11-2058
बुध	राह्	26-11-2058	15-06-2061
बुध	गुरु	15-06-2061	21-09-2063
बुध	शनि	21-09-2063	31-05-2066
केतू	केतू	31-05-2066	27-10-2066
केतू	शुक्र	27-10-2066	27-12-2067
केतू	सूर्य	27-12-2067	03-05-2068
केतू	चन्द्र	03-05-2068	02-12-2068
केतू	मंगल	02-12-2068	30-04-2069
केतू	राह्	30-04-2069	19-05-2070
केतू	गुरु	19-05-2070	24-04-2071
केतू	शनि	24-04-2071	02-06-2072
केतू	बुध	02-06-2072	31-05-2073
शुक्र	शुक्र	31-05-2073	29-09-2076
शुक्र	सूर्य	29-09-2076	29-09-2077
शुक्र	चन्द्र	29-09-2077	31-05-2079

शुक्र	मंगल	31-05-2079	30-07-2080
शुक्र	राह	30-07-2080	31-07-2083
शुक्र	गुरु	31-07-2083	31-03-2086

- नीचे खिंची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

प्रत्यंतर दशा

दशा : गुरू अपहार : शुक्र

1.शु	12-04-2022 >> 21-09-2022	2.र	21-09-2022 >> 09-11-2022
3.चं	09-11-2022 >> 29-01-2023	4.मं	29-01-2023 >> 27-03-2023
5.रा	27-03-2023 >> 20-08-2023	6.गु	20-08-2023 >> 28-12-2023
7.श	28-12-2023 >> 30-05-2024	8.बु	30-05-2024 >> 15-10-2024
9.के	15-10-2024 >> 11-12-2024		

दशा : गुरू अपहार : सूर्य

1.र	11-12-2024 >> 26-12-2024	2.चं	26-12-2024 >> 19-01-2025
3.मं	19-01-2025 >> 05-02-2025	4.रा	05-02-2025 >> 21-03-2025
5.गु	21-03-2025 >> 29-04-2025	6.श	29-04-2025 >> 14-06-2025
7.बु	14-06-2025 >> 26-07-2025	8.के	26-07-2025 >> 12-08-2025
9.शु	12-08-2025 >> 29-09-2025		

दशा : गुरू अपहार : चंद्र

1.चं	29-09-2025 >> 09-11-2025	2.मं	09-11-2025 >> 07-12-2025
3.रा	07-12-2025 >> 18-02-2026	4.गु	18-02-2026 >> 24-04-2026
5.श	24-04-2026 >> 10-07-2026	6.बु	10-07-2026 >> 17-09-2026
7.के	17-09-2026 >> 16-10-2026	8.शु	16-10-2026 >> 05-01-2027
9.र	05-01-2027 >> 29-01-2027		

दशा : गुरू अपहार : मंगल

1.मं	29-01-2027 >> 18-02-2027	2.रा	18-02-2027 >> 10-04-2027
3.गु	10-04-2027 >> 26-05-2027	4.श	26-05-2027 >> 19-07-2027
5.बु	19-07-2027 >> 05-09-2027	6.के	05-09-2027 >> 25-09-2027
7.शु	25-09-2027 >> 21-11-2027	8.र	21-11-2027 >> 08-12-2027
9.चं	08-12-2027 >> 05-01-2028		

दशा : गुरू अपहार : राहु

1.रा	05-01-2028 >> 16-05-2028	2.गु	16-05-2028 >> 10-09-2028
3.श	10-09-2028 >> 26-01-2029	4.बु	26-01-2029 >> 31-05-2029
5.के	31-05-2029 >> 21-07-2029	6.शु	21-07-2029 >> 14-12-2029
7.र	14-12-2029 >> 27-01-2030	8.चं	27-01-2030 >> 10-04-2030
9.मं	10-04-2030 >> 31-05-2030		

दशा : शनी अपहार : शनी

1.श	31-05-2030 >> 21-11-2030	2.बु	21-11-2030 >> 25-04-2031
3.के	25-04-2031 >> 29-06-2031	4.शु	29-06-2031 >> 29-12-2031
5.र	29-12-2031 >> 22-02-2032	6.चं	22-02-2032 >> 23-05-2032
7.मं	23-05-2032 >> 26-07-2032	8.रा	26-07-2032 >> 07-01-2033
9.गु	07-01-2033 >> 03-06-2033		

दशा : शनी अपहार : बुध

1.बु	03-06-2033 >> 20-10-2033	2.के	20-10-2033 >> 16-12-2033
3.शु	16-12-2033 >> 29-05-2034	4.र	29-05-2034 >> 17-07-2034
5.चं	17-07-2034 >> 07-10-2034	6.मं	07-10-2034 >> 03-12-2034
7.रा	03-12-2034 >> 30-04-2035	8.गु	30-04-2035 >> 08-09-2035
9.श	08-09-2035 >> 11-02-2036		

दशा : शनी अपहार : केतु

1.के	11-02-2036 >> 05-03-2036	2.शु	05-03-2036 >> 12-05-2036
3.र	12-05-2036 >> 01-06-2036	4.चं	01-06-2036 >> 05-07-2036
5.मं	05-07-2036 >> 28-07-2036	6.रा	28-07-2036 >> 27-09-2036
7.गु	27-09-2036 >> 20-11-2036	8.श	20-11-2036 >> 23-01-2037
9.बु	23-01-2037 >> 22-03-2037		

दशा : शनी अपहार : शुक्र

1.शु	22-03-2037 >> 30-09-2037	2.र	30-09-2037 >> 27-11-2037
3.चं	27-11-2037 >> 04-03-2038	4.मं	04-03-2038 >> 10-05-2038
5.रा	10-05-2038 >> 30-10-2038	6.गु	30-10-2038 >> 03-04-2039
7.श	03-04-2039 >> 03-10-2039	8.बु	03-10-2039 >> 15-03-2040
9.के	15-03-2040 >> 21-05-2040		

दशा : शनी अपहार : सूर्य

1.र	21-05-2040 >> 07-06-2040	2.चं	07-06-2040 >> 06-07-2040
3.मं	06-07-2040 >> 27-07-2040	4.रा	27-07-2040 >> 17-09-2040
5.गु	17-09-2040 >> 02-11-2040	6.श	02-11-2040 >> 27-12-2040
7.बु	27-12-2040 >> 14-02-2041	8.के	14-02-2041 >> 06-03-2041
9.शु	06-03-2041 >> 03-05-2041		

दशा : शनी अपहार : चंद्र

1.चं	03-05-2041 >> 20-06-2041	2.मं	20-06-2041 >> 24-07-2041
3.रा	24-07-2041 >> 19-10-2041	4.गु	19-10-2041 >> 04-01-2042
5.श	04-01-2042 >> 05-04-2042	6.बु	05-04-2042 >> 26-06-2042
7.के	26-06-2042 >> 30-07-2042	8.शु	30-07-2042 >> 04-11-2042
9.र	04-11-2042 >> 02-12-2042		

दशा : शनी अपहार : मंगल

1.मं	02-12-2042 >> 26-12-2042	2.रा	26-12-2042 >> 25-02-2043
3.गु	25-02-2043 >> 20-04-2043	4.श	20-04-2043 >> 23-06-2043
5.बु	23-06-2043 >> 19-08-2043	6.के	19-08-2043 >> 12-09-2043
7.शु	12-09-2043 >> 18-11-2043	8.र	18-11-2043 >> 09-12-2043
9.चं	09-12-2043 >> 11-01-2044		

दशा : शनी अपहार : राहु

1.रा	11-01-2044 >> 15-06-2044	2.गु	15-06-2044 >> 01-11-2044
3.श	01-11-2044 >> 15-04-2045	4.बु	15-04-2045 >> 09-09-2045
5.के	09-09-2045 >> 09-11-2045	6.शु	09-11-2045 >> 02-05-2046
7.र	02-05-2046 >> 23-06-2046	8.चं	23-06-2046 >> 17-09-2046
9.मं	17-09-2046 >> 17-11-2046		

दशा : शनी अपहार : गुरू

1.गु	17-11-2046 >> 21-03-2047	2.श	21-03-2047 >> 14-08-2047
3.बु	14-08-2047 >> 23-12-2047	4.के	23-12-2047 >> 15-02-2048
5.शु	15-02-2048 >> 18-07-2048	6.र	18-07-2048 >> 03-09-2048
7.चं	03-09-2048 >> 19-11-2048	8.मं	19-11-2048 >> 12-01-2049
9.रा	12-01-2049 >> 31-05-2049		

कुंडली में ग्रहों की विशिष्ट युति योग

जन्म कुंडली में ग्रहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होने वाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता हैं। कुछ योग ग्रहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं, लेकिन विशेष दूसरे योग जो हैं वह ग्रहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान ग्रहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते हैं तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती हैं। आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण ग्रहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहां दिया गया हैं।

राजयोग

लक्षण: चौथा और नवम भाव के अधिपति एक दूसरे की दृष्टि में है। सातवाँ और नवम भाव के अधिपति एक दूसरे की दृष्टि में है। इस जन्मकुण्डली में लाभदायक राजयोग दिखाई देती है।

कुंडली में वृहत राजयोग उदित है,

देहपुष्टी योग

लक्षण: चार राशिगत लग्नाधीपती चलायमान शुभ ग्रहों से दृष्ट हो।

आप बलवान शरीर के व्यक्ति हैं। आप कठिन परिस्थिति में भी शांत और संतोषी रहते हैं। आप धनवान होंगे और जीवन सुखमय बितायेंगे।

सदसन्चार योग

लक्षण: लग्नाधीपती चर राशी में हो।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज़्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।

मातृमूलाधान योग

लक्षण: दूसरे स्थान का स्वामी चतुर्थस्थान के स्वामी के साथ हो।

आपको मातृकृपा के कारण धन संपन्न होगा।

सुभावेसी योग

लक्षण: चंद्रमा के अलावा लाभदायक ग्रह सूर्य से दूसरा अधिग्रहण करता है।

यह योग आपको जानकार बनाएगा। आपके पास बातचीत का एक विशिष्ट तरीका होगा। इसकी सभी के द्वारा की जाएगी। आपको एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में जाना जाएगा। अन्य लोग एक भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में आपकी प्रशंसा करेंगे। आपके पुरूषत्वो के गुणों की अधिक प्रशंसा की जाएगी। आप एक उत्कृष्ट पुरूष के रूप में जाने जाएँगे।

सुभावासी योग

लक्षण: चंद्रमा के अलावा लाभदायक ग्रह सूर्य से बारहवाँ अधिग्रहण करता है।

सूर्य से बारहवें में लाभकारी ग्रह आपको अच्छे लाभ दे रहा है। आपकी विज्ञान और प्रौद्योगिकी में रुचि होगी। आप इस क्षेत्र में एक शोधकर्ता भी हो सकते हैं। आप एक बुद्धिमान पुरुष के रूप में जाने जाएँगे। आप अधिक धनराशि प्राप्त कर सकते हैं। आपके पास आकर्षक गुण होंगे।

सुभाउभयचारी योग

लक्षण: चंद्रमा के अलावा लाभदायक ग्रह सूर्य के किसी एक ओर उपस्थित।

यह योग आपको अच्छा स्वास्थ्य होगा। अच्छी धनराशि का भी संकेत दिया जाता है। लोग आप पर विश्वास करेंगे। वे आपकी सुंदरता की भी प्रशंसा करेंगे। आप जिम्मेदारियों को उठाने में भी बहुत अच्छे होंगे। आप भाग्यशाली होंगे और आपके साथ एक नेता के समान व्यवहार भी किया जाएगा।

दामिनी योग

लक्षण: सभी ग्रह कोई छ: राशियाँ अधिग्रहित करते हैं।

आपको एक दानधर्म वाले पुरुष के रूप में जाना जाएगा। आप दूसरों से सहायता प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि आप उनकी परवाह करते हैं। आपकी पालतू जानवरों में रुचि होगी। आप भी कुछ पालतू जानवरों की स्वामी हो सकते हैं।

मात्रु स्नेह योग

लक्षण: प्रथम और चतुर्थ के भगवान को लाभों द्वारा स्वीकार किया जाता है।

यह आपके लिए एक बहुत सुखदायक योग है। यह योग आपकी माँ के साथ एक महान संबंध को दर्शाता है। एक पुरुष के रूप में, आप अपनी माँ के आशीर्वाद से धन्य हो जाएँगे। यह आपके जीवन में मूल्य को जोड़ेगा।

पुत्र सुख योग

लक्षण: बुध द्वारा अधिग्रहित पाँचवाँ घर।

यह योग बच्चों से खुशी को इंगित करता है। आप एक धन्य पिता के रूप में दूसरों के द्वारा देखे जाएँगे। आप इस बारे में खुश होंगे।

सत्कालत्र योग

लक्षण: सातवें का भगवान अथवा शुक्र जुड़ते हैं अथवा बृहस्पति या बुध द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।

यह योग प्रदर्शित करता है कि आप एक खुश पुरुष होंगे और आप एक अच्छी पत्नि प्राप्त करेंगे। आपका पति सच्चा एवं पवित्र होगा तथा यह आपके जीवन में मूल्य जोड़ेगा।

अमर योग

लक्षण: सभी अनिष्टकारी केंद्रों को अधिग्रहित करते हैं।

यह योग धन और समृद्धि की पुष्टि करता है। यह योग प्रदर्शित करता है कि आपके पास भौतिक अधिग्रहण जैसे भूमि होगी। आप विशाल भू श्रृंखला की स्वामी हो सकते हैं। एक पुरूष के रूप में, यह आपको खुशी और आत्मविश्वास प्रदान करेंगे।

पारिजात योगा

लक्षण: जहाँ स्थानस्वामी पर सत्तास्वामी का अधिकार है, वहाँ राशीस्वामी त्रिकोन कों मिलता है।

आपके विवाहस्वामी स्थानानुसार, राजयोग का प्रकार पारिजात योग आपके कुंडली में है। यह योग आपको सुखी और समाधानी जीवन देता है, खास कर जीवन के उत्तरवर्ती भाग में, आपको वास्तव में बहोत मेहनत करनी पड सकती है। तरक्की धिमे धिमे रहेगी। आप नियम संभालते है और उनसे नजदिकी सें संबंधित है। आपको बहोत मेहनत करनी पडे फिर भी शिक्षा आपका मजबुत आधार बन सकती है। आपको सभी सुविधा प्राप्त होगी और आप परंपरा और कर्मकांड इनके चाहते रहेंगे।

द्विग्रह योग

लक्षण: दो ग्रह एक ही भाव में स्थीत है। सूर्य,शनी, चौथा भाव में है।

आप पौरणिक जीवन शैली और धार्मिक प्रक्रिया में दिलचस्प होंगे। कुछ समय ऐसा होगा जब आपको अपने परिवार से दूर रहना पड़ेगा।आपने शैक्षिक योग्यता और सामर्थ्य से उद्योग क्षेत्र में आपकी पहचान और मान्यता होगी।

अस्तंगत ग्रह स्थिती का विवरण।

जब कोई ग्रह सूर्य के निकट आता है तब वह अस्त हो जाता है। अस्त ग्रह अशुभ स्थिती उत्पन्न करता है। सूर्य से बारह अंश पर चन्द्र, सत्रह अंश पर मंगल, तेरह अंश पर बुध, ग्यारह अंश से गुरू, नौ अंश पर शुक्र और पंद्रह अंश पर शनी अस्तंगत माना जाता है।

शनी अस्तंगत है।

ग्रहयुद्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्य ग्रह जब भी एक अंश से ज्यादा समीप आते हैं तो 'ग्रहयुद्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुद्ध में शुभाशुभ के बारे में अलग-अलग विचार धारायें हैं। उसकी एक झलक इस प्रकार है। अन्य ग्रहों के लिए : उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजयी होते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुद्ध नहीं है।

अवस्था, क्षीण, अस्त, युद्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

ग्रह	उच्च राशि में / नीच राशि में	अन्स्तंगत	ग्रहयुद्ध	वक्री	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र					युवावस्था
बु					मित्रावस्था
शु					कुमारावस्था
मं					बालावस्था
गु				वक्री	मित्रावस्था
श		सयहोग			कुमारावस्था

अष्टकवर्ग फलादेश

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्ग पद्धति भारतीय ज्योतिष की भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से संबंधित अंको के प्रयोग का उपयोग करती है। अष्टकवर्ग का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण। यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों के अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है। गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गया है। एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे संबंधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है। हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिए जाते है । गृहों का 0-8 अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	कुल
मेष	4	2	5	3	4	4	3	25
वृषभ	6	2	2	4	2	5*	2	23
मिथुन	3	6	6	2	5	5	3	30
कर्क	6	4	4	6	3	5	4	32
सिंह	4	3	2	4	1	3	2	19
कन्या	3*	5	5	6	5	5	5	34
तुला	3	6	7	4	5	5	5	35
वृश्चिक	5	4	4	6*	3	3	3	28
धनु	2	5*	7	4	2	5	4*	29
मकर	3	4	4*	5	1	5	2	24
कुंभ	6	2	3	4	4	5	4	28
मीन	4	5	5	4	4*	6	2	30
	49	48	54	52	39	56	39	337

*ग्रहों की स्थिति

लग्न कन्या में है।

चन्द्र का अष्टकवर्ग

आपके जन्मकुण्डली के चन्द्र अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिंदु न ही अत्यधिक लाभदायक और न ही अत्यधिक हानिकारक है। निर्भाग और बीमारी अक्सर आपके सामने आयेगी फिर भी उनका सामना करने और आगे चलने का शक्ति आप में होगी। अपने माँ की स्वास्थ्य पर ध्यान रखना अच्छा होगा।

सूर्य का अष्टकवर्ग

सूर्य के अष्टकवर्ग में पाँच बिंदु है और आपको धर्मनिष्ठ लोगों का साथ होगा। आपको ज्ञान और उत्तम शिक्षा प्राप्त होगी। आपके सफलताओं पर लोग प्रंशसा करेंगे। आपको कभी भी नए कपडों से प्यार नहीं होगा। आप अपने यौवन और बचपन के समय बहुत से उत्सवों को मना सकते हैं।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

बुध के अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिंदु उद्योग और रोजगारी के लिए उचित नहीं है। यह एक सूचना होता हुए भी आप हर अवसर पर अच्छी तरह काम करेंगे। अपने स्थायी पद को मज़बूत करके प्रतिकूल गृह उपस्थिति को शान्त करेंगे। उद्योग से संबंधित नष्टों को भोगने के लिए मानासिक शक्ति उत्पन्न करनी चाहिए।

शुक्र का अष्टकवर्ग

आपमें ऐसा कुछ है जो विविध प्रकार के अद्भुत लोगों के संयोग को आकर्षित करता है। वह तत्व आपके जन्मकुण्डली के शुक्र अष्टकवर्ग में उपस्थित छ: बिंदुओं के कारण है। अपने आकर्षण को सही रूप से सभाँलने पर यह आपके लिए उचित और अनुकूल होगा।

मंगल गृह का अष्टकवर्ग

आपके जन्मकुण्डली के मंगल अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिंदु आपको भाग्यवान बनायेंगे यह अवस्थिति ग्रहों के हानिकारक प्रभावों को कम करने की ओर सहायक होगा और आपको तुल्य रूप से अच्छा और बुरा भाग्य प्रदान करेगा। आपको अत्यधिक आनन्द लेने का अवसर प्राप्त नहीं होगा न हि आपको दु:ख के गहराई में डूबना पड़ेगा।

गुरू का अष्टकवर्ग

आपके जन्मकुण्डली के गुरू अष्टकवर्ग में उपस्थित पाँच बिंदु महत्वपूर्ण वरदान है। यह आपको परिश्रम के लिए सफलता प्राप्त करने में, चुनौतियों का सामना करने के लिए और शत्रुओं से बचने के लिए सहायक होंगे। आपने इस भाग्यशाली ग्रह के अवस्थिति के नीचे जन्म लिया है और इस परिस्थिति के लाभ का अनुभव कर सकते है और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

शनी गृह का अष्टकवर्ग

शनि के अष्टकवर्ग में चार बिंदु है । यह दूसरों से खुशी को सूचित करते हैं। अपने परिवार रिश्तेदारों और दोस्तो से आपको खुशी और सहायता प्राप्त होगी।

सर्वाष्टकवर्ग फलादेश

आपके जन्मकुण्डली में लग्न, चन्द्र चिन्ह, दसवें और ग्यारहवें भाव में तीस और उससे ज्यादा बिंदु है और चन्द्र गुरू से संयोग में है। आपको शक्ति और प्रभाव को नियंत्रण करने का अवसर मिलेगा। आपका ग्रह स्थान यह सूचित करता है आप एक विभाग के लोगों के मार्गदर्शक बनेंगे। आप राजनीतिक क्षेत्र, समाजिक प्रश्नो के योद्धा या अपने क्षेत्र या समुदाय के मार्गदर्शक बन सकते हैं। आपके नक्षत्र का अच्छा प्रभाव आपको उच्च पद जैसे मंत्री या व्यवस्थापक का स्थान प्राप्त करने का भाग्य प्रदान करता है।

आपके जन्मकुण्डली में तीस से ज्यादा बिंदु है और नवम, दसवें और छठे अधिपति से संबंधीत है। आप परिवारिक मूल्यों और सदाचारों के निदेर्शनात्मक गुणों से अनुग्रहित होंगे जो आपको अपने परिवार का मार्गदर्शक और विश्वसनीय बनाएगा। निर्णयों और मार्गदर्शन का सम्मान के साथ अनुसरण करिए और आप पीढी के लिए संकेत दीप बनेंगे।

आपके जन्मकुण्डली के ग्यारहवें भाव में दसवें भाव से ज्यादा बिंदु है, लेकिन बारहवें भाव में ग्यारहवें भाव से कम बिंदु है और उदीयमान में उपस्थित बिंदु ग्यारहवी से भी महत्व है। अगर आप चाहे तो भी सम्पत्ति और प्रसिद्धि से दूर नहीं भाग सकते जो किसी ओर के ऊपर घटित है जिनके ग्रहों का प्रभाव आपके जैसे हो। आपकी समृद्धि और प्रसिद्धि जीवन में खुशी के लिए रूकावट नहीं होगी। जरूर ही आपका जीवन एक अनुग्रहित जीवन होगा।

आपके जन्मकुण्डली में बिंदुओं का अधिकतम फैलाव कर्क राशी से तुला राशी तक है जो आपके यौवन वर्षो को सूचित करता है। आपका उद्योग उन्नत पद तक पहुँच सकता है। शैक्षणिक और व्यक्तिगत अभिलाषा इस समय उत्पन्न होते है और संतोष और समृद्धि उच्च स्थान पर होंगे। भाग्य आपको बेकारी और शैक्षणिक खिंचाव का अनुभव करना का अवसर नहीं देगा। गृहस्थ संबंधी चिरानन्द भी आपको प्राप्त होगा।

गुरू, शुक्र, बुध द्वारा धारण किए राशियों में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा। आपकी शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगी और आपको ऊँचे पढाई के लिए स्थान प्राप्त होगा। यह आपको उद्योग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्धि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा। आपका सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा। यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा।

आपके लिए यह विशिष्ट समय 23, 28 और 24 उम्र में होगा।

गोचर फल

नाम	: Rahul Kumar (पुरुष)
जन्म राशी	: कन्या
जन्म नक्षत्र	: हस्त
ग्रहस्थिती	: 26-अप्रैल-2024
अयनांश	: चैत्रपक्ष

सूर्य का गोचर फल।

सूर्य एक राशि में एक महीने तक एक भाव का स्थान ग्रहण करता है।

- (13-अप्रैल-2024 >> 13-मई-2024)

इस समय सूर्य आठवाँ भाव से संचार करेगा।

इस समय आपके मन में कुछ न कुछ पीड़ा होती रहेगी। सामने आये प्रश्नों का धैर्य के साथ सामना करने को तैयार रहना पड़ेगा। उदर रोग से मुक्त रहने का प्रयास कीजिए। गलत धारणाएँ आपके मन को अशान्त बनायेगी। अकारण क्रोधित होना पड़ेगा। यात्रा में अवरोध और परेशानियाँ आयेंगी।

- (13-मई-2024 >> 12-जून-2024)

इस समय सूर्य नवम भाव से संचार करेगा।

बड़प्पन का अनुभव होगा। स्वाभाव में क्रोध और निराशा प्रकट होगी। योग्य और अयोग्य का निर्णय करने में भूल होगी। अभिमान और गौरव को नष्ट करने वाले नीच कार्य का ओर ध्यान आकर्षित होगा। आत्मसंयम से ही इससे बचा जा सकता है।

- (12-जून-2024 >> 12-जुलाई-2024)

इस समय सूर्य दशम भाव से संचार करेगा।

अच्छी परिस्थिति पुनः प्राप्त होगी। सभी क्षेत्रों में सामान्य लाभ होता रहेगा। परिवार के अन्य व्यक्तियों को अनेक लाभ होंगे। कुछ ही सप्ताहों के अन्दर आपको प्रधान व्यक्तियों के बीच में स्थान प्राप्त होगा। अनेक व्यक्तियों से आपको प्रोत्साहन मिलता रहेगा।

गुरू का गोचर फल।

बृहस्पति एक राशि में करीब एक साल तक रहता है। यह एक प्रधान ग्रह है और बहुत से फल इसके आधार पर बताये जाते हैं।

- (23-अप्रैल-2023 >> 1-मई-2024)

इस समय गुरू आठवाँ भाव से संचार करेगा।

इस समय आपके लिए बृहस्पति का प्रभाव बहुत कठिन चल रहा है। इसके कारण दु:खी रहना पड़ेगा। सभी कार्यों में रुकावटें आती रहेंगी। अनावश्यक रूप में विषाद का अनुभव होता रहेगा। अनेक शारीरिक एवं मानसिक विषमताएँ आ सकती हैं। प्रतियोगिता और चुनाव आदि में पराजय मिल सकता है। गंभीरता से पुरुषार्थ करना आवश्यक है।

- (2-मई-2024 >> 15-मई-2025)

इस समय गुरू नवम भाव से संचार करेगा।

आपको समझ लेना चाहिए कि कष्टों का समय बीत गया हैं और लाभदायक समय आने वाला है। आपकी अशान्ति का समय बीत चुका है। याद रखिए कि आपको

एक बड़ा मुख्य लाभ होनेवाला है। पारिवारिक सुख, बढ़ा हुआ आदर, समाज की मान्यता सब प्राप्त होगा। आप जनसमूह के बीच कीर्ति और आदर पाएंगे। आप के सामाजिक कार्य के प्रति जनसमूह का आदर व्यक्त होगा। रुके हुए काम पूरे होंगे। भाग्योदय होकर रहेगा।

शनि का गोचर फल।

शनि सामान्यत: दु:ख देनेवाला ग्रह है और उसका प्रभाव दु:ख उत्पन्न करता रहता है। पर कुछ स्थानों में वह खूब लाभदायक फल भी देता है। शनि एक राशि से दूसरी राशि में ढाई वर्ष में पहुँचता है।

- (18-जनवरी-2023 >> 29-मार्च-2025)

इस समय शनि छठ्ठा भाव से संचार करेगा।

पिछले दिनों की तुलना में यह काल आपको शांति और सुख दिलायेगा। आपके विरोधी अब आप को अधिक बलवान समझेंगे। नए कार्यों को शुरू करने का अच्छा समय है। जीवन अधिक सुखी होगा और धन कमाने का श्रेष्ठतम मौका प्राप्त होगा। अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। अपने स्थान को मज़बूत बनाने के लिए अपनी प्रतिभा को तेजस्वी बनाने का पुरुषार्थ आवश्यक हैं।

- (30-मार्च-2025 >> 3-जून-2027)

इस समय शनि सातवाँ भाव से संचार करेगा।

शनि आपको उदास रखना चाहता है। इसे बदलने के लिए आपको वस्तुओं की विशेषता जानकर, अपनी योग्यताओं को समझकर पुरुषार्थ करना पड़ेगा। इस कंटक शनि के समय में आपको अपनी इच्छा के विरुद्ध यात्रा करनी पड़ेगी। अनेक विज्ञ संतोषी आपके लिए समस्या खड़ी करेंगे।

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी कोष्टक

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	हस्त	चंद्र	राहु	राहु
चंद्र	हस्त	चंद्र	सूर्य	मंगल
सूर्य	पूर्वाषाढा	शुक्र	चंद्र	गुरू
बुध	उत्तराषाढा	सूर्य	शनी	शनी
शुक्र	ज्येष्ठा	बुध	मंगल	बुध
मंगल	रेवती	बुध	गुरू	शनी
गुरू	कृत्तिका	सूर्य	शनी	शनी
शनी	मूल	केतु	बुध	शुक्र
राहु	शततारका	राहु	बुध	गुरू
केतु	पूर्वा	शुक्र	शुक्र	मंगल
गुलिक	हस्त	चंद्र	चंद्र	राहु

निरयन सारिणी संक्षिप्त (डिग्री. मिनिट. सेकेन्ड.)

ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	कन्या	11:53:33	हस्त / 1	गुरू	वृषभ	3:2:11R	कृत्तिका / 2
चंद्र	कन्या	22:47:8	हस्त / 4	शनी	धनु	11:51:40	मूल / 4
सूर्य	धनु	16:36:51	पूर्वाषाढा / 1	राहु	कुंभ	14:5:41	शततारका / 3
बुध	मकर	3:18:42	उत्तराषाढा / 2	केतु	सिंह	14:5:41	पूर्वा / 1
शुक्र	वृश्चिक	23:48:24	ज्येष्ठा / 3	गुलिक	कन्या	10:10:54	हस्त / 1
मंगल	मीन	26:22:59	रेवती / 3				

उपग्रह

हर ग्रह की स्तिथिनुसार उपग्रह की भी गणना की जाती है। सूर्य के रेखांश पर आधारित - चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपग्रह इस प्रकार है।

धुमादी योग के उपग्रह

ग्रह	उपग्रह	गणना प्रणाली
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्री. 20 मिनिट.
राहु	व्यतिपात	360 - धूम
चंद्र	परिवेश	180 + व्यतिपात
शुक्र	इन्द्रचाप	360 - परिवेश
केतु	उपकेतु	इन्द्रचाप + 16 डिग्री. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरू, शनी के उपग्रहों का तथा मंगल के अन्य उपग्रहों की काल गणना दिवस - रात्रि को समभाग में विभाजित करके की जाती है।

प्रथम भाग दिन के स्वामी को समर्पित है, तत्पश्च्यात अन्य स्वामी साप्ताहिक क्रमानुसार होते हैं। आठवे भाग का कोई स्वामी नहीं होता।जन्म रात्रि के समय हुआ हो तो, आठ समभागो में विभाजीत पहले सात भागों को ग्रहों का स्वामित्व दिया जाता है। यह सप्ताह के पाँचवे दिन से गिना जाता है।

रेखांश की गणना के लिये दो पद्धतियों का उपयाग किया गया है।प्रथम पद्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (ग्रहों के स्वामी) ग्रहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पद्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण ग्रहाधीपती के आधिन रहता है।

गुलीक काल गणनानुसार शनी के उपग्रह की स्तिथि अनुसार एक तीसरी पद्धति का भी अनुसंधान किया गया है, जिससे धुमादी योग के उपग्रहों के रेखांश की गणना की जाती है। यह नीचे दिये गये उदयकाल पर निर्भर है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26	घटि 10 घटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
बुधवार	14	26
गुरूवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

- स्वीकृत प्रणाली : लग्न के प्रारंभकाल

ग्रह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
सूर्य	काल	0:24:33	2:6:56
बुध	अर्धप्रहर	17:35:3	19:17:26
मंगल	मृत्यु	3:49:18	5:31:41
गुरू	यमघंट	19:17:26	20:59:48
शनी	गुलिक	22:42:11	0:24:33

रेखांश उपग्रह

उपग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
काल	166:12:26	कन्या	16:12:26	हस्त	2
अर्धप्रहर	77:18:5	मिथुन	17:18:5	आर्द्रा	4
मृत्यु	210:31:47	वृश्चिक	0:31:47	विशाखा	4
यमघंट	99:22:33	कर्क	9:22:33	पुष्य	2
गुलिक	143:36:28	सिंह	23:36:28	पूर्वा	4
परिवेश	150:3:8	कन्या	0:3:8	उत्तरा	2
इन्द्रचाप	209:56:51	तुला	29:56:51	विशाखा	3
व्यतिपात	330:3:8	मीन	0:3:8	पूर्वाभाद्रपदा	4
उपकेतु	226:36:51	वृश्चिक	16:36:51	अनुराधा	4
धूम	29:56:51	मेष	29:56:51	कृत्तिका	1

उपग्रहों के नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी-सहपती / नक्षत्राधी-अनुसहपती के कोष्टक

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	हस्त	चंद्र	शनी	बुध
अर्धप्रहर	आर्द्रा	राहु	शुक्र	बुध
मृत्यु	विशाखा	गुरु	चंद्र	सूर्य
यमघंट	पुष्य	शनी	शुक्र	गुरु
गुलिक	पूर्वा	शुक्र	शनी	राहु
परिवेश	उत्तरा	सूर्य	राहु	शनी
इन्द्रचाप	विशाखा	गुरु	चंद्र	शनी
व्यतिपात	पूर्वाभाद्रपदा	गुरु	चंद्र	शनी
उपकेतु	अनुराधा	शनी	गुरु	राहु
धूम	कृत्तिका	सूर्य	राहु	शनी

षोढसवर्ग तालिका

ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी										
6:	6:	9	10:	8:	12:	2:	9	11	5	6:
होरा										
4:	5	4:	4:	5	5	4:	5	5	5	4:
द्रेष्क्रान										
10:	2:	1	10:	4:	8:	2:	1	3	9	10:
चतुर्थांश										
9	3	3	10:	5	9	2:	12:	2:	8:	9
सप्तांश										
2:	5	12:	4:	7	12:	8:	11	2:	8:	2:
नवांश										
1	4:	5	10:	11	11	10:	4:	11	5	1
दशांश										
5	9	2:	7	11	4:	11	12:	3	9	5
व्दादशांश										
10:	3	3	11	5	10:	3	1	4:	10:	10:
सोडशांश										
3	9	5	2:	5	11	6:	3	12:	12:	2:
विशान्ष										
12:	8:	4:	3	12:	10:	11	12:	6:	6:	11
चतुर्विंशांश										
1	10:	6:	6:	11	1	6:	2:	4:	4:	12:
भम्श										
2:	12:	3	6:	7	9	6:	11	7	1	1
त्रिशांश										
6:	10:	9	2:	10:	8:	2:	9	9	9	6:

खवेदांश										
10:	1	11	11	2:	6:	11	4:	7	7	8:
अक्षवेदांश										
2:	7	9	5	4:	12:	9	2:	2:	2:	12:
शष्टियांश										
5	3	6:	4:	7	4:	8:	8:	3	9	2:
ओजराशी गणना										
6	9	10	5	10	6	5	8	9	9	5

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या 7-तुला 8-वृश्चिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंभ 12-मीन

वर्गोत्तम बुध राहु केतु वर्गोतम में है।

अष्टकवर्ग

चं	र	बु	शु	मं	गु	श	कुल
मेष							
4	2	5	3	4	4	3	25
वृषभ							
6	2	2	4	2	5	2	23
मिथुन							
3	6	6	2	5	5	3	30
कर्क							
6	4	4	6	3	5	4	32
सिंह							
4	3	2	4	1	3	2	19
कन्या							
3	5	5	6	5	5	5	34
तुला							
3	6	7	4	5	5	5	35
वृश्चिक							
5	4	4	6	3	3	3	28
धनु							
2	5	7	4	2	5	4	29
मकर							
3	4	4	5	1	5	2	24
कुंभ							
6	2	3	4	4	5	4	28
मीन							
4	5	5	4	4	6	2	30
49	48	54	52	39	56	39	337

षडबल संक्षिप्त सारिणी

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
532.81	313.02	366.73	344.92	522.67	345.31	429.19
संपूर्ण शडबल						
8.88	5.22	6.11	5.75	8.71	5.76	7.15
मौलीक आवश्यकता						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.48	1.04	0.87	1.05	1.74	0.89	1.43
संबन्धी स्थान						
2	5	7	4	1	6	3

इष्टफल, कष्टफल कोष्टक

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल						
19.35	8.74	26.93	16.25	29.69	42.81	8.52
कष्टफल						
38.65	46.24	32.72	43.48	27.28	16.65	31.75

भावबल की तालिका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधीपती का बल											
366.73	344.92	522.67	345.31	429.19	429.19	345.31	522.67	344.92	366.73	532.81	313.02
भाव दिग्बल											
60.00	50.00	20.00	30.00	10.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भावदृष्टीबल											
51.24	14.91	44.86	43.52	64.80	7.66	20.80	40.68	36.03	4.54	53.86	67.26
संपूर्ण भावबल											
477.97	409.83	587.53	418.83	503.99	446.85	396.11	603.35	430.95	401.27	596.67	420.28
भावबल के रूप											
7.97	6.83	9.79	6.98	8.40	7.45	6.60	10.06	7.18	6.69	9.94	7.00
संबन्धी स्थान											
5	10	3	9	4	6	12	1	7	11	2	8

Astro-Vision In-Depth Horoscope

With best wishes : Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.

First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[In-Depth Horoscope - 14.0.0.23-2024-4-26]

Note:
This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.